

नवतत्त्व प्रकरण.

गाथा मूल सलग श्रीलाइन पैका टाइपयी
गाथाओंना तुटा शब्दोंना अर्थ, गाथा
मूल, शब्दार्थ जेगो तथा विस्तारार्थ
तथा नवतत्त्वना तुटा बोल

आरुत्ति बीजी.

ठपावी प्रसिद्ध करनार,
श्री आद्य जैन धर्म प्रवर्तक सच्चा
पांजरापोल अमदावाद

अमदावाद-लक्ष्मी प्रिन्टींग प्रेसमा
शा मणीलाल ठगरचंदे ठाप्यु

सवत १९६७ सने १९११

किमत आठ आना.

।अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः।

जीवाऽजीवा पुण्णं,
पावाऽसव संवरो य निज्जरणा
बंधो मुख्खो य तथा,
नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया,
लीसा बासीय हुंति बायाला ॥
सत्तावन्नं बारस,
चउ नव भेया कमेणेसिं ॥२॥
एगविह दुविह तिविहा,
चउद्विहा पंच छुद्विहा जीवा ॥

चेयण तस इयरेहिं,
वेय गइं करणं काएहिं ॥ ३
एगिंदिय सुहुभियरा,
सन्नियर पणिंदियायस विति
अपजत्ता एजत्ता,
क्रमेण चउदस जियुहाणा ॥ ४
नाणं च दंसणं चैव,
चरित्तं च तवो तथा ॥
वीरियं उवओगो य,
एयं जीवरुस लख्खणं ॥ ५
आहार सरीरइंदेय,
पूजत्ती आण प्राण भास मणे

॥३॥ पंच पंचे लुपिये,
 ॥४॥ विगला सन्नि सन्नीणं ॥६॥
 ॥५॥ णिंदिय त्तिबलूसा,
 ॥६॥ शरु दस पाण चउ छ सग अठु
 ॥७॥ हग दु ति चउरिंदीणं,
 ॥८॥ असन्नि सन्नीण नव दस य ॥९॥
 ॥१०॥ इति जीवितत्त्वम् ॥
 ॥११॥ धम्मा ऽधम्मा ऽगासा,
 ॥१२॥ तिय तिय भेया तहेव अद्दाय ॥
 ॥१३॥ खंधा देस पएग्गा,
 ॥१४॥ परमाणु अजीव चउदसहा ॥१५॥
 ॥१६॥ धम्मा ऽधम्मा पुग्गल,

नहं कालो पंच हुंति अज्जीवा
 चलणंसहावो धम्मो,
 थिरसंठाणो अहम्मो य ॥ ९

अवगाहो आगासं,
 पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा
 खंधा देस पएसा,
 परमाणू चेव नायत्था ॥ १० ॥
 सहंधयार उज्जोय,
 पभा छाया तवेहि आ ॥
 वण्ण गंध रसा फासा,
 पुग्गलाणं तु लख्खणं ॥ ११ ॥
 एगाकोडि सतसट्ठि,

लखा सत्तहुत्तरी सहसा य ॥
 दोयसया सोलहिया,
 आवलिया इगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥
 समयाऽवली मुहुत्ता,
 दीहा परखा य मास वरिसा य ॥
 भणिओ पलिआ सागर,
 उस्सप्पिणीसप्पिणीकालो ॥ १३ ॥
 धरिणामि जीव मुत्ता,
 सपएसा एग खित्त किरिआय ।
 निच्चं कारण कत्ता,
 सन्नगय मियर अप्पवेसे ॥ १४ ॥
 ॥ इत्यजीवितत्त्वम् ॥

सा उच्चगोय मणु दुग,
 सुर दुग पंचिदिजाइ पणदेहा ॥
 आइ ति तणू णुवंगा,
 आइम संघयण संठाणा ॥ १५ ॥
 वण्णचउक्का गुरु लहु,
 परघा ऊसास आय वुज्जोयं ॥
 सुभखगइ निमिण तस दस,
 सुर नर तिरियाउ तित्थयरं ॥ १६ ॥
 तस वायर पज्जत्तं,
 पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च ॥
 सुस्सर आइज्ज जसं,
 तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥

॥ इति पुण्यतत्त्वम् ॥
 नाणंतराय दसगं,
 नववीये नीय साय मिच्छत्तं ॥
 थावर दसनिरयतिगं,
 कसाय षणवीसतिरियदुगं ॥ १८ ॥
 इग वि ति चउ जाइओ,
 कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥
 अपसत्थं वण्ण चऊ,
 अपढम संघयण संठाणा ॥ १९ ॥
 थावर सुहुम अपज्जं,
 साहारण मथिर मसुभदुभगाणि
 दुस्सर णाइज्ज जसं,

थावरदसगं विवज्जत्थं ॥२०॥
॥ इति पापतत्त्वम् ॥
इंदिअ कसाय अब्वय,
जोगा पंच चउ पंच तिन्निकमा ॥
किरिआओ पणवीसं,
इमाउ ताओ अणुक्कमसो ॥२१॥
काइय अहिगरणीआ,
पाउसिआ पारितावणी किरिया ॥
पाणाइवायारंभिअ,
परिग्गहिया मायवत्तीअ ॥२२॥
मिच्छा दंसण वत्ती,
अपच्चखाणाय दिट्ठि पुट्ठिअ ॥

(९)

पाडुच्चिअ सामंतो,
वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥२३॥
आणवणि विआरणिआ,
अणभोगाअणवकंखपच्चइआ
अन्नापओग समुदा,
ण पिज्जा दोसेरिआवहिआ ॥२४॥
॥ इत्याश्रवत-त्वम् ॥
समिई गुत्ति परीसह,
जइधम्मो भावणा चरित्ताणि ॥
षण ति दुवीस दस बार,
स पंचभेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥
इरिया भासे सणा दाणे,

उच्चारे समिई सुअ ॥

मृणगुत्ति वयगुत्ति,

कायगुत्ति तहेव य ॥ २६ ॥

खुहा पिवासा सी उण्हं,

दंसा चेला रइ तिथओ ॥

चरिआ निसिहिया सिज्जा,

अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥

अलाभ रोग तण फासा,

मल सक्कार परीसहा ॥

पन्नाअन्नाण सम्मत्तं,

इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥

खंती महव अज्जव,

मुत्ती तव संजमे अ बोधवे ॥

सच्चं सोअं आकिं,

चणं च बंभं च जइधम्मो ॥२९॥

पढम मणिच्च मसरणं,

संसारो एगया य अन्नत्तं ॥

असुइत्तं आसव सं,

वरो अ तह निज्जारा नवमी ॥३०॥

लोगसहावो बोही,

दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा ॥

एआओ भावणाओ,

भावे अत्ता पयत्तेणं ॥३१॥

सामाइ अत्थ पढमं,

उच्चारे समिई सुअं ॥

मृणगुत्ति वयगुत्ति,

कायगुत्ति तहेव य ॥ २६ ॥

खुहा पिवासा सी उण्हं,

दंसा चेला रइ तिथओ ॥

चरिआ निसिहिया सिज्जा,

अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥

अलाभ रोग तण फासा,

मल सक्कार परीसहा ॥

पन्नाअन्नाण सम्मत्तं,

इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥

खंती महव अज्जव,

मुत्ती तव संजमे अ बोधवे ॥
 सच्चं सोअं आकिं,
 चणं च बंभं च जइधम्मो ॥२९॥
 पढम मणिच्च मसरणं,
 संसारो एगया य अन्नत्तं ॥
 असुइत्तं आसव सं,
 वरो अ तह निज्जरा नवमी ॥३०॥
 लोगसहावो बोही,
 दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा ॥
 एआओ भावणाओ,
 भावे अवा पयत्तेणं ॥३१॥
 सामाइ अत्थ पढमं,

छेओवद्वावणं भवेवीअं ॥

परिहारविसुद्धीयं,

सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥

तत्तोअ अहख्खायं,

खायं सच्चम्मि जीवलोगम्मि ॥

जं चरिऊण सुविहिआ.

वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥३३॥

॥ इति संवरतत्त्वं ॥

अणसण मूणोयरिआ,

वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ॥

काय किलेसो संली,

णआयबज्झातेवो होइ ॥३४॥

पायच्छित्तं विणओ,
 वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ॥
 ज्ञाणं उस्सग्गो विअ,
 अभिभतरओ तवो होई ॥३५॥
 वारसविहं तवो नि,
 ज्जराय बंधो चउविगप्यो अ ॥
 पयई ठिइ अणुभाग,
 पणस भेएहिं नायव्वो ॥३६॥
 ॥ इति निर्जरातत्त्वम् ॥
 पयइ सहावोवुत्तो,
 ठिइ कालावहारणं ॥
 अणुभागो रसो नेओ

पएसो दलसंचओ ॥ ३७ ॥
 पड पडिहार सि मज्जा,
 हडचित्तकुलाल भंडगारीणं ॥
 जह ए एसिंभावा,
 कम्माणविजाण तह भावा । ३८ ।
 इह नाण दंसणावर,
 ण वेय मोहाउ नाम गोआणि ॥
 विग्घं च पण नव दु अ,
 ढ्वीसचउतिसय दुपणविहं । ३९ ।
 नाणे य दंसणावरणे,
 वेअणिए चेव अंतराएअ, ॥
 तीसं कोडाकोडी,

अयराणं ठिईय उक्कोसा ॥४०॥
 सित्तरि कोडाकोडी,
 मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥
 तित्तीसं अयराइं,
 आउड्डिइ बंध उक्कोसा ॥४१॥
 बारस मुहुत्त जहन्ना,
 वेयणिए अठ नाम गोएसु ॥
 सेसाणंतमुहुत्तं,
 एयं बंध ठिई माणं ॥ ४२ ॥
 ॥इति बंधतत्त्वं ॥
 संतपय परूवणया,
 दुव्वपमाणं च खित्तफुसणाय ॥

कालो अ अंतरं भाग,
 भावेअप्पा बहु चेव ॥ ४३ ॥
 संत्तं सुद्ध पयत्ता,
 विज्जंतं खकुसुमं व न असंतं ॥
 मुख्वत्ति पयं तस्सउ,
 परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥
 गइ इंदीए काये,
 जोए वेए कसाय नाणे य ॥
 संजम दंसण लेसा,
 भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥
 नरगइ पणिंदि तसभव,
 सन्निअहखाय खइअसम्मत्ते ॥

मुखोणाहार केवल,
दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥

द्वपमाणे सिद्धा,
णं जीव द्वाणि हुंति णंताणि ॥

लोगस्स असंखिज्जे,
भागे इक्को य सबे वि ॥ ४७ ॥

फुसणा अहिआ कालो,
इगसिद्ध पडुच्च साइओणंतो ॥

पडिवाया भावाओ,
सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥ ४८ ॥

सव्व जियाण मणंते,
भागे तेतेसिं दंसणं नाणं ॥

खइए भावे परिणा,
 मि एअ पुण होइ जीवत्तं ॥ ४९ ॥
 थोवा नपुंस सिद्धा,
 थी नर सिद्धा कक्षेण संखगुणा ॥
 इअ मुख्य तत्तमेअं,
 नव तत्तालेसओ भणिआ ॥ ५० ॥
 जीवाइ नव पयत्थे,
 जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं ॥
 भावेण सहहंतो,
 अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥
 सव्वाइं जिणेसर भा,
 सिआइं वयणाईं नन्नहा हुंति ॥

इअ बुद्धी जस्स मणे,
 सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥ ५२ ॥
 अंतो मुहुत्त मित्तं,
 पि फासिअं हुज्जा जेहिं सम्मत्तं ॥
 तेसिं अवड्डुपुग्गल,
 परिअट्ठो चैव संसारो ॥ ५३ ॥
 उस्सप्पिणी अणंता,
 पुग्गल परिअट्ठओ मुणेअट्ठो ॥
 तेणंताती अट्ठा,
 अणागयट्ठा अणंतगुणा ॥ ५४ ॥
 जिण अजिण तित्थ तित्था,
 गिहिअन्नसलिंगथी नर नपुंसा ॥

पत्तेअ सयंबुद्धा,
 बुद्धबोहि कणिक्काय ॥ ५५ ॥
 जिणसिद्धा अरिहंता,
 अजिण सिद्धा य पुंडरिया पमुहा
 गणहारि तित्थसिद्धा,
 अतित्थसिद्धाय मरुदेवी ॥ ५६ ॥
 गिहिलिंग सिद्ध भरहो,
 वलकलचीरीय अन्न लिंगम्मि ॥
 साहू सलिंग सिद्धा,
 थी सिद्धा चंदणा पमुहा ॥ ५७ ॥
 पुं सिद्धा गोयमाई,
 गांगेयाई नपुंसया सिद्धा ॥

(११)

पत्तेय सयंबुद्धा,
भणिया करकंडु कविलाई ॥५८॥
तह बुद्धबोहिगुरुबो,
हिया इग समय एग सिद्धा य ॥
इग समएवि अणेगा,
सिद्धा ते णेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥
जइआइ होइ पुच्छा,
जिणाण मग्गंमि उत्तरं तइया ॥
इक्कस निग्गोयस्स,
अणंत भागो य सिद्धिगओ ॥६०॥
इति मोक्षतत्त्वं ॥
इति श्री नवतत्त्वं समाप्तं ॥



॥ अथ नवतत्त्व प्रकरण. ॥

गाथा १ लीना तूटा शब्दना अर्थ.

जीवा=जीवतत्त्व.

अजीवा=अजीवतत्त्व.

पुण्य=पुण्यतत्त्व

पाव=पापतत्त्व

आसव=आश्रवतत्त्व

सवरो=सवरतत्त्व

निष्कारणा=निर्जरातत्त्व

बंधो=रजतत्त्व

मुक्तो=मोक्षतत्त्व

तहा=तमज.

नवतत्त्वा=नवतत्त्वो.

हुति=ठे

नायव्वा=जाणवा योग्य

जीवाऽजीवा पुस, पावाऽसव संवरोय निष्कार-
णा ॥ बंधो मुक्तो य तहा, नवतत्त्वा हुंति ना-
यव्वा ॥ १ ॥

शब्दार्थः-जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव संवर अने नि-
ष्कारणा वली वध तमज मोक्ष ए नवतत्त्वो जाणवा योग्य ठे. ॥

विस्तारार्थः-व्यवहारनये करी जे सुजाशुभ कर्मोने
कर्त्ता, हर्त्ता तथा जोक्ता ठे, अने निश्चय नये कर्

(१)

ज्ञान, दर्शन, तथा चारित्ररूप निज गुणोनोज कर्त्ता
तथा जोक्ता ठे, अथवा दु ख मुख ज्ञानोपयोग लक्ष
णवत चेतना सहित होय, तथा प्राण धारण करे,
तेने प्रथम (जीवा) जीवतत्व कहिये तेथो विपरीत
जे चेतना रहित जरु स्मजाववालो होय तेने वीजु
(अजीवा) अजीवतत्व कहिये जेणे करी शुभ
कर्मोना पुद्गलोना सचय थवाथी मुख उत्पन्न थाय
ठे तेने त्रोजु (पुण्य) पुण्यतत्व कहिये तेथी विप
रीत जेणे करी अशुभ कर्मोना पुद्गलोना सचय
थवाथी दु ख उत्पन्न थाय ठे, तेने चोथु (पावा)
पापतत्व कहिये जेणे करी नया कर्म वधाय तेने
(आसव) आश्रवतत्व कहिये, जेथी आवता कर्म
रोकाय तेने पाचमु (सवरो) सवरतत्व कहिये, जेथी
देश थकी कर्मोना क्षय थाय ठे तेने (निऊरणा)
निऊरा तत्व कहिये, नवा कर्मोनी साथे जुना कर्मोनु
मलो जवुं तेने (वयो) वधतत्व कहिये, अने जे आत्म
प्रदेशथकी सर्वथा कर्मोना क्षय थवो तेने (मुस्को)

(३)

मोक्षतत्त्व कहिये, जेम ए नवतत्व सिद्धांतोने विषे,
कहेला ठे (तहा) तेमज समकितदृष्टि जीवोने आ
(नवतत्ता) नवतत्वो (नायव्वा) जाणवा योग्य
(हुति) ठे. आ नवतत्वोमां जीव अने अजीव ए
चे तत्व मात्र जाणवा योग्य ठे, पुण्य, सवर, निर्झ-
रा अने मोक्ष ए चार तत्व ग्रहण करवा योग्य ठे;
अने पाप, आश्रव ने वध ए त्रण तत्व तो मात्र स
र्वथा सर्वने त्याग करवा योग्यज ठे ॥ १ ॥

गाथा २ जीना वृटा रचदना अर्थ

चउदस=चौद

वायालीमा=वैतालीस.

दासी=व्यामी.

वायाला=वैतालीस

सत्तावन्न=सत्तावन.

वारस=वार

चउ=चार

नव=नव.

कमेणोसिं=अनुरुमे करी.

जेआ=जेदो

हुति=धाय ठे.

चउदस चउदस वाया, लीसा वासीअ हुंति
वायाला ॥ सत्तावन्नं वारसं, चउ नव जेआ
कमेणोसिं ॥ २ ॥

(४)

अन्वयार्थ -पदेला तत्त्वना चौद, वीजाना चौद, त्रीजाना वेंतालीस, चौथाना व्यासी, अने पाचमाना वेंतालीस, ठजाना सत्तावन, सातमाना वार, आठमाना चार अने नवमाना नव एवा अनुक्रमे करीने जेदो थाय ठे ॥ १ ॥

विस्तारार्थ -प्रथम जीवतत्त्वना(चउदस) चौद, वीजा अजीव तत्त्वना (चउदस)चौद, त्रीजा पुण्यतत्त्वना (वायालीसा) वेंतालीस, चौथापापतत्त्वना (वासी) व्यासी,पाचमा आश्रवतत्त्वना (वायाला) वेंतालीस, ठठा सवरतत्त्वना (वारस) वार, आठमा वधतत्त्वना (चउ) चार, अने नवमा मोक्षतत्त्वना (नव) नव एवो रीते नयेना (कमेणेसि) अनुक्रमे करी (जेआ जेद (हुति) थाय ठे आ प्रमाणे सर्व मलीनवतत्त्वना जेदनी सख्या वसेने ठोतेर थाय ठे तेउमां अज्यासी जेद अरुपी ठे अने एकसो अठयासी जेद रूपी ठे ॥ १ ॥

आ नव तत्वोना जेदनों कोठो.

अंक	नाम	रूपिजेद.	अरूपिजेद.	हेय ज्ञेयादि.
१	जीव	१४	०	ज्ञेय.
२	अजीव	४	१०	ज्ञेय.
३	पुण्य	४२	०	उपादेय.
४	पाप	८२	०	हेय
५	आश्रव.	४२	०	हेय.
६	संवर.	०	५९	उपादेय.
७	निर्जरा	०	१२	उपादेय.
८	वध	४	०	हेय,
९	मोक्ष	०	९	उपादेय.

गाथा ३ जीना नूटा शब्दना अर्थ.

एकविह=एक विध

डविह=द्विविध

निविहा=त्रिविध.

चउत्रिहा=चतुर्विध.

पच=पच (विध)

उच्चिहा=पञ्चविध

जीरा=नीरतत्त्व

चयण=चेतना

तस=प्रस

इयगेहि=इतर (सगावर)

नेय=वेद.

गइ=गति.

करण=इन्द्रियो.

काएहि=काये करीने

एगविह ड्रविह त्रिविहा, चउद्विहा पंच उद्वि-
हा जीवा ॥ चेषण तस इयरेहि, वेय गइ क-
रण काएहि ॥ ३ ॥

शब्दार्थ-चेतना, तस अने स्थावर ए जेटोए करीने, बली त्रण
वेद, चार गति, पाच इडिय अने ठ काये करीने जीवो, एक
प्रकारना, ये प्रकारना, त्रण प्रकारना, चार प्रकारना, पाच
प्रकारना, अने ठ प्रकारना जाणवा. ॥ ३ ॥

विस्तारार्थ - (एगविह) एकविध, (ड्रविह) द्विविध,
(त्रिविहा) त्रिविध, (चउद्विहा) चतुर्विध, (पंच)
पंचविध, (उद्विहा) षड्विध एटले ठ प्रकारे
(जीवा) जीवतत्व ठे सर्व जीवने श्रुतज्ञाननो
अनतमो ज्ञाग उद्यामो रहेवाथी तेउं (चेषण)
चेतना लक्षणवान ठे माटे एकविध जाणवु (तस)
तस एटले जेनामां हालवा चालवानी शक्ति ठे,
अने (इयरेहि) इतर एटले (स्थावर) एटले जे
स्थिरतावान होय ते एम सर्व जीव द्विविध जा-
णवा (वेय) वेद त्रण ठे त्रिवेद, पुरुषवेद अने
नपुंसकवेद एम सर्व जीव त्रिविध जाणवा (गइ)

गति चारु ठे देवगति, मनुष्यगति, तिर्यचगति अन्ये
 नरकगति एम सर्व जीव चतुर्विध जाणवा (क-
 रण) इन्द्रियो पांच ठे एकेंद्रि, वेइन्द्रि, तेइन्द्रि, चउ
 रिन्द्रि अन्ये पचिन्द्रि एम सर्व जीव पंचविध जाणवा
 अन्ये (काएहि) काय ठ ठे-पृथ्विकाय, अप्काय,
 तेउकाय, वाउकाय वनस्पतिकाय अन्ये त्रसकाय.
 एम सर्व जीव पञ्चविध जाणवा ॥ ३ ॥

गाथा ४ योना वृटा शब्दना अर्थ

एगिंदिय=एकेंद्रि

सुहुमि=सुहुम

इयरा=इतर (गतर)

सन्नियर=सन्निय

इयर=इतर (अंसइ)

पण्णिंदिया=पचिन्द्रिय.

म=महित. साये

वि=वेइन्द्रि

ति=तेइन्द्रि

चउ=चउरिन्द्रि.

अपजत्ता=अपर्याप्ता

पज्जत्ता=पर्याप्ता.

कमेण=अनुक्रमे.

चउदस=चौद

जियठाणा=जीवना स्थानक

एगिंदिय सुहुमियरा, सन्नियर पण्णिंदियाय
 स वि ति चउ ॥ अपजत्ता पज्जत्ता, कमेण
 चउदस जियठाणा ॥ ४ ॥

शब्दार्थः—सूक्ष्म अने वादर एवा एकेंद्रिय, वादर वेद्दिय, तेद्दिय अने चर्त्तरिद्दिय, सद्दो अने अमद्दो पार्त्तिद्दिय ए सात जेद पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जेथी अनुक्रमे जीवना चौद जेद होय.

विस्तारार्थ - (एगिदिय) एकेन्द्रिना (सुक्ष्म) सूक्ष्म अने (इयरा) इतर एटले वादर एवा वे जेद ठे तेमा सुक्ष्म एटले जे चौद राजलोकमा व्यापी रह्या ठे, पर्वत प्रमुखने जेटीने जाय आवे कांइ वस्तुथी ठेदाय जेदाय नहि, अग्नि जेने वाळी शके नहि, चर्मदृष्टिए देखाय नहि, मनुष्यादिक कोइ प्राणीना उपयोगमा आवे नहि एवा अदृश्य अने निरतिशयी सूक्ष्म नाम कर्मोदयवतने सूक्ष्म कहे ठे अने वादर एटले जे नियतस्थान वर्त्ती ठे, परतु कोइ वस्तुने जेटी शके नहि, पण जेनो जेद तथा ठेद बीजी वस्तुथी थड शके, जेने अग्नि वाळी शके, चर्मदृष्टिनो विषय थड शके, जे मनुष्यादिक सर्व प्राणीना उपयोगमा आवी शके एवा दृश्य अने सातिशयी वादर नाम कर्मोदयवतने वादर कहे ठे अने (पण्णिदिया) पार्त्तिन्द्रिना (सन्नि)

(९)

संज्ञी एटले मन संज्ञा सहित अने वीजा (इयर)
इतर एटले असंज्ञी एटले मन संज्ञा रहित एवा
वे जेद ठे (स) तेनी साथे (वि) वेइंद्रिय
(ति) तेइंद्रिय (चउ) चउरिंद्रिय ए दरेकनो अ
केको जेद मेळवता सात जेद थाय. अने तेमने
(पज्जत्ता) पर्याप्ता अने (अपज्जत्ता) अपर्याप्ता ग
णतां (कमेण) अनुक्रमे करी (जीयणाणा) जी
वनां स्थानक (चउदस) चौद थाय. वली वीजा
मत प्रमाणे जीवना वत्रीस जेद पण थाय ठे. ते
आ नीचेनी गाथा उपरथी समजी लेवा.

पण थावर सुहुमियरा, परित्तवण सन्नि अ-
सन्नि विगलतिगं ॥ इय सोलस पज्जत्ता अ-
पज्जत्ता जीव वत्तीसं. ॥ १ ॥

अर्थ.—पांच सूक्ष्म स्थावर, पांच वादर स्थावर, प्र
त्येक वनस्पतिकाय, संज्ञी पंचिंद्रि, असंज्ञी पंचिंद्रि
अने विकलत्रिक ए सोल जेदने पर्याप्ता अने अपर्या
प्ता गणतां जीवना वत्रीस जेद थाय. ॥

गाथा ५ मीना वृटा शब्दोना अर्थ -

नाण=ज्ञान
 दसण=दर्शन
 चेव=निश्चे
 चरित्त=चारित्र.
 तवो तप
 तहा=तेमज

वीरिय=वीर्य.
 उवओगो उपयोग.
 एअ= ए, आ
 जीवस्म=जीवन्तु.
 लस्काण=लक्षण.

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥ वी
 रियं उवओगोय, एअ जीवस्म लस्काणं ॥५॥

शब्दार्थ - ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमज रीर्य अने उप
 योग ए प्रकारे जीवन्तु लक्षण ठे ॥ ५ ॥

विस्तारार्थ - (नाण) ज्ञान पाच प्रकारे ठे मति,
 श्रुत, अवधि, मन पर्यव अने केवल ए पाच ज्ञान
 समकितवतने कहा ठे अने मति अज्ञान, श्रुत
 अज्ञान तथा विन्नगज्ञान ए त्रण अज्ञान मिथ्या
 त्वीने कहा ठे ए वेउ मळीने आठनी सरया
 थाय ठे, तेमानु गमे ते एक अथवा अधिक ज्ञान
 जेमा होय, (च) वली (दसण) दर्शन ते चार
 प्रकारे ठे चहु, अचहु, अवधि अने केवल ए चार
 प्रकारना दर्शनमांनु गमे ते एक अथवा अधिक

जेमां होय, (चैव) निश्चे (चरित्तं) चारित्र ते सात प्रकारे ठे सामायिक, ठेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यात, देशविरति तथा आवरति ए सात प्रकारना चारित्रमांनु गमे ते एक अथवा वधारे चारित्र जेमां होय, तथा (तवो) तप वे प्रकारे ठे—एक द्रव्यथी ते अणश णादि अने वीजु इत्यानिरोधरूप ज्ञावथी एमानु एक अथवा अधिक तप जेमा होय (तहा) तेम ज (वीरिय) करण तथा लब्धिरूप अथवा बल पराक्रमरूप ए वे प्रकारना वीर्यमांनु गमे ते एक अथवा वधारे जेमा होय तथा (उपव्योगो) उपयोग वार प्रकारे ठे—पाच ज्ञान, त्रण अज्ञान तथा चार दर्शन, ए वार प्रकारना साकार तथा निराकाररूप उपयोगमांनो गमे ते एक अथवा वधारे उपयोग जेमा होय तेने ससारी अथवा सिद्ध जीव कहिये आ गुण जीव विना वीजा कोइमां होय नहि (एअ) ए प्रकारे (जीअस्स) जीवनु

(लक्षण) लक्षण जाणवु

गाथा ६ ठीना वृटा शब्दना अर्थ.

आहार=आहार.

| चउ=चार.

मरीर=शरीर

पच=पाच

इन्द्रिय=इन्द्रिय

| ठप्पिय=ठए (पण)

पङ्कती=पर्याप्ति

इग=एकेंद्रिये

आणपाण=श्वामोच्छ्वास

विगला=विकलेंद्रिये.

जास=जापा

| असन्नि=असङ्गीने

मणे=मन

| मश्रीण=मङ्गीने

आहार शरीर इन्द्रिय, पङ्कती आणपाण जा
स मणे ॥ चउ पंच पंच ठप्पिय, इग विगला
सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥

शब्दार्थ - आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासो-
च्छ्वास पर्याप्ति, जापा पर्याप्ति, मन पर्याप्ति तेमा चार पर्याप्ति
एकेंद्रिये, पाच पर्याप्ति विकलेंद्रिये, पाच पर्याप्ति असङ्गीने
अने ठ पर्याप्ति सङ्गी जीवने होय ठे ॥ ६ ॥

विस्तारार्थ - पुद्गलना उपचयथी थयो जे पुद्गल
परिणमन हेतु शक्ति विशेष, तेने पर्याप्ति कहे ठे.
तेना वे जेद ठे एक लब्धि पर्याप्ति अने धीजी क

रण पर्याप्ति, जे कर्मना उदयथी आरंभेली स्वयोग्य पर्याप्ति सर्व पूरी करी नथी पण करशे तेने लब्धि पर्याप्ति कहे ठे अने जेणे स्वयोग्य पर्याप्ति सर्व पूरी करी लीधी तेने करण पर्याप्ति कहे ठे. तेमज अपर्याप्ति पण वे प्रकारनी ठे एक लब्धि अपर्याप्ति अने बीजी करण अपर्याप्ति आरंभेली स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी करे नहि तेने लब्धि अपर्याप्ति कहे ठे अने जे स्वयोग्य पर्याप्ति सर्व पूरी करशे, पण हजी कीधी नथी तेने करण अपर्याप्ति कहे ठे वैक्रिय शरीरने एक शरीर पर्याप्ति अंतर्मुहूर्तनी होय ठे ने वाकीनी पांच एक समयनी जाणवी. अने औदारिक शरीरने आहार पर्याप्ति एक समयनी होय ठे ने वाकीनी पांच अंतर्मुहूर्तनी जाणवी उत्पत्ति समयने त्रिपे ए सर्व पर्याप्ति सर्व जीवो यथायोग्य रीते साथे आरंभे ठे पण पूरी अनुक्रमे करे ठे ते पर्याप्ति ठ प्रकारे ठे. हरे क जीवने ज्वांतरनी उत्पत्ति समये जे शक्तिवन्ने आहार लक्ष्णे तेने रसपणे परिणमाव्रवानी शक्ति

विशेष तेने (आहार) आहार पर्याप्ति कहे ठे.
 पठी ते रसरूप परिणामने रस, रुधिर, मास, मेद,
 अस्थि, मज्जा तथा वीर्य ए सात धातुपणे परिण-
 मानीने शरीर वायवानी जे शक्ति विशेष तेने
 (सरीर) शरीर पर्याप्ति कहे ठे पठी ते सात
 धातुपणे परिणमाव्यो जे रस, ते जेने जेटलां ऊ
 वय इन्द्रिय जोड्ये तेने तेटलां इन्द्रियपणे परिणमा
 ववानी जे शक्ति विशेष तेने (इन्द्रिय) इन्द्रिय प
 र्याप्ति कहे ठे (पञ्च) पर्याप्ति ए शब्द दरेकनी
 साथे लगानुगे उपर कहेली त्रण पर्याप्ति पूरी कर्या
 विना कोइ जीव मरण पामे नहि माटे पर्याप्ति
 वचमा कह्यो ठे ए त्रण पर्याप्ति बाधोने पठी श्वा
 सोच्छ्वास योग्य वर्णणानां दलिक लइ श्वासोच्छ्वा
 सपणे परिणमावीने अवलवी मूकवानी जे शक्ति
 विशेष तेने (आणपाण) श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहे
 ठे ज्ञापा योग्य पुद्गल लइ ज्ञापापणे परिणमा
 वीने अवलवी मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने
 (ज्ञास) ज्ञापा पर्याप्ति कहे ते श्वासे मदे वर्णण

योग्य पृष्ठगल लङ् मनपणे परिणमाव्रीने अवलंबी
 मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने (मणे) मन प-
 र्याप्ति कहे ठे. एव्री रीते ए ठ प्रकारे पर्याप्ति कही
 ठे आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इंद्रिय पर्याप्ति
 तथा श्वासोन्वास पर्याप्ति ए (चउ) चार पर्याप्ति
 (इग) एकेंद्रियने होय आ चार पर्याप्तिनी साथे
 पाचमी ज्ञापा पर्याप्ति जोमीए ते पाच पर्याप्ति
 (विगला) विकलेंद्रियने एटले वेइद्रिय, तेइंद्रिय
 तथा चतुरिंद्रियने प्रत्येके होय. एज (पंच) पांच
 पर्याप्तिउं (असन्नि) असन्नी पचेन्द्रियने होय.
 अने (ठप्पिअ) ठए पर्याप्तिउं (सन्नीणं) सन्नी
 पचेन्द्रियने होय ॥ ६ ॥

गाथा ७ मीना वृटा शब्दना अर्थ.

परिन्द्रिय=पाच इन्द्रियो.

चित्तिल=वण वल.

ऊसास=धासांभवास

आन-आनखु-आयुष

दम-दस.

पाण-भाण.

चउ-चार.

ठ-ठ

सग-सात

अठ आठ

इग-एकेंद्रियने

उ-वेइन्द्रियने.

ति-नेइन्द्रियने.

चतुरिन्द्रिया-चतुरिन्द्रियने

समूर्द्धिम मनुष्य, अने बीजा समूर्द्धिम तिर्यच, तेउ-
 मा समूर्द्धिमतिर्यचने तो उपर कहेला नव प्राण होय
 ठे, एवो नियम ठे- पण समूर्द्धिम-मनुष्यने वचन
 बल नहिं होवने लीधे आठज प्राण होयठे तेमा
 पण जो श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति बाधतो ठतो मरण
 पामे, तो सातज प्राण रहेठे अने जे मातापिताना
 सयोगे करी गर्जने त्रिपे उत्पन्न थाय ठे, एवा म
 नुष्य, तथा तिर्यच, जे गर्जज जातिना होय, तथा
 नारकी कुन्नीमा उपजे ठे, ने देवता उत्पाद शय्या
 मा उपजे ठे, पण मातापिताना सयोगे गर्जमा
 उपजता नथी, तोपण देवता अने नारकीने सङ्गी
 पंचेन्द्रियने उपर कहेला नव प्राणनी साथे मनोबल
 जोरुयाथी दस प्राण होय ठे ए सर्व ड्रव्य प्राण
 जाणवा, अने ज्ञाव प्राण तो आत्माना ज्ञानादि
 गुण ठे ते जाणवा ॥ ७ ॥

॥ इति श्री जीवतत्त्व वर्णन समाप्तम् ॥

गाथा ७ मीना वृटा शब्दोना अर्थ.

धम्मा=धर्मास्तिकाय.

अधम्मा=अधर्मास्तिकाय.

आगामा=आकाशास्तिकाय

तियतिय=त्रण त्रण.

जेया=जेदो

नहेव=तेमज.

अका=काल.

खम=खध

देस=देश

पएसा=प्रदेश.

परमाणु=परमाणु.

अजीव=अजीव तत्त्व

चउदसहा=चउदसकारे

धम्माऽधम्माऽगासा, तिय तिय जेया त
हेव अद्वाया। खंधादेसपएसा, परमाणु अजीव
चउदसहा ॥ ७ ॥

शब्दार्थः—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए
त्रणना खध, देश अने प्रदेश एवा त्रण त्रण जेदो ठे एटले ते
नव जेद थया तेवीज रीते वली काल, अने पुत्तलना खध, देश,
प्रदेश तथा परमाणु. ए प्रमाणे अजीव तत्त्व चौद प्रकारे ठे.

विस्तारार्थ.—धम्मा एटले धर्मास्तिकाय, अधम्मा ए-
टले अधर्मास्तिकाय, आगामा एटले आकाशास्ति-
काय, ए त्रण उव्यना खध, देश तथा प्रदेश, एवा
तिय तिय जेया एटले त्रण त्रण जेद होवाची प्र-

त्येक अस्तिकायने त्रणे गुणता नवनी सरुया थायते प्रदेशना समूहने अस्तिकाय, कहेते एवो अर्थ, उपर कहेला त्रण ड्रव्योने लागु करवो ए त्रण ड्रव्यनो चौड रज्ज्वात्मक संध कहेवाय ते तेथी काश्क उंगो होय अथवा सकल प्रदेशानुगत सामान्य परिणामनी परे अवयव वर्मास्तिकायना जेह बुद्धि परिकल्पिताद्यादि प्रदेशात्मक जे विज्ञाग, तेने देश कहीये, अने जे प्रकृष्टदेश अति निर्विज्ञाज्य अविज्ञाज्य होय, ते प्रदेश कहेवायते तहेव एटले तेमज अद्धा एटले काल ड्रव्यनो वर्त्तमान समय रूप एकज प्रदेश होवार्थी ते अस्तिकाय कहेवाय नाहे, माटे एकज जेद जाणवो एम दस जेद थया य एटले चकार उजयान्वयी अव्यय ते एथी पुद्गलास्तिकाय ड्रव्य लेखु, तेना अखरु ड्रव्य रूप आखा पदार्थने अथवा अनतादि परमाणुना मलेला समूहने खधा एटले खध कहे ते खधनो केटलोक ज्ञाग जेनो खधनी साथे सवध होय ते तेने देस एटले देश कहे ते जेनी खधनी साथे

निर्विज्ञाज्य कल्पना करी उता खंधनी साथे अ-
 ज्ञिन्न संबंध होय तेने पएसा एटले प्रदेश कहे ठे.
 अने तेज प्रदेश जो खंधयी ज्ञिन्न थाय एवो जे
 निर्विज्ञाज्य ज्ञाग एटले जेना केवलोनी बुद्धिये
 एक ज्ञागना वे ज्ञाग थइ शके नाहिं तेने परमाणु
 एटले परमाणु कहे ठे ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकाय
 इव्यना चार जेद ते पूर्वे कहेला दस जेद साथे
 मेलवता अजीव एटले अजीवतत्त्वना चउदसहा
 एटले चौद जेद थाय. ॥ ७ ॥

गाथा ए मीना वृटा शब्दना अर्थ

धम्मा-धर्मास्तिकाय
 अधम्मा-अधर्मास्तिकाय,
 पुग्गल-पुद्गलास्तिकाय,
 नह-आकाशास्तिकाय
 कालो-काल
 पच-पाच
 हुति-होय ठे

अजीव-अजीवइव्य,
 चलणसहावो-चलन स्वजाव-
 वालो,
 धम्मो-धर्मास्तिकाय
 धिरसठाणो-धिर सस्थान
 (स्वजाव) वाजो
 अधम्मो-अधर्मास्तिकाय.

धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पच हुति

अजीवा ॥ चक्षण सहावो धम्मो, थिर संठाणो
अहम्मो य ॥ ए ॥

शब्दार्थ—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल ए पाच अजीव इव्य होय ठे तेमा चलन स्वजाव गुणवालो धर्मास्तिकाय ठे. अने थिर स्वजाव गुणवालो अधर्मास्तिकाय ठे ॥ ए ॥

विस्तारार्थ—धम्मा एटले धर्मास्तिकाय, अधम्मा एटले अधर्मास्तिकाय, पुग्गल एटले पुद्गलास्तिकाय, न्ह एटले आकाशास्तिकाय, अने कालो एटले काल, ए पच एटले पाच अजीवा एटले अजीव इव्य हुति एटले ठे ए पाचनी साथे जीवइव्य जेद्वयार्थी पइइव्य कहेवायठे

जेम मांठलाना सचारनु, पाणी ए अपेक्षा कारण ठे, तेम जीवने तथा पुद्गलने गतिपणे परिणमता जे अपेक्षा कारण होय, तेने धर्मास्तिकाय कहे ठे जेम पाणी विना मांठलानु सचार थइ शके नहीं तेम धर्मास्तिकाय विना जीव अने पुद्गल चाली शके नहीं अर्थात् चक्षण सहावो ध-

म्मो एटले चलन स्वभाव गुण, ते धर्मास्तिका
य जाणवो.

जेम मुसाफरने विसामो लेवाने विपे वृक्षादि
कनी ठाया अपेक्षा कारण ठे, तेम जीव तथा पु-
द्गलने स्थितिपणे परिणमतां जे अपेक्षा कारण
होय, अर्थात् थिरसठाणो अहम्मो एटले स्थिर रा-
खवानो सहजगुण तेने अधर्मास्तिकाय कहे ठे ए
वन्ने अरूपी द्रव्य चउद राजलोक व्यापी ठे वर्ण,
गंध, शब्द, रूप, स्पर्श तथा रसरहित असंख्यात
प्रदेशी ठे, जे उदासीन वृत्ति होय तेने अपेक्षा का
रण कहे ठे अ एटले चकार, पादपूर्णार्थ उन्नय
न्वयी अव्यय ठे ॥ ए ॥

गाथा १० मीना तूटा शब्दना अर्थ

अवगाहो=अवकाश(स्वभावगुण)	खधा=स ४
आगास=आकाशास्तिकाय.	देस=देश.
पुग्गल=पुद्गलने	पएसा=प्रदेश
जीराण=जीवने	परमाणु=परमाणु
पुग्गला=पुद्गल द्रव्य.	चेव=निधे.
चउहा=चार प्रकारे.	नायव्वा=जाणवा.

अवगाहो आगासं, पुग्गल जीवाण पुग्ग
ला चउहा ॥ खंधा देसपएसा, परमाणू चव
नायद्धा ॥ १० ॥

शब्दार्थ -अवकाश आपवाना स्वप्नावगालो आकाशास्तिकाय
जाणवो. पुद्गलो चार प्रकारना ठे ते खंध, देश, प्रदेश तथा
परमाणु निश्चयथी जाणवा. ॥ १० ॥

विस्तारार्थ -आगास एटले आकाशास्तिकाय ते लो-
कालोक व्यापी वर्ण, रूप रस, गंध, तथा स्पर्श
रहित अरूपी अनंत प्रदेशी अने साकरने दूधनी
पेठे जेनो अवगाहो एटले अवकाश स्वप्नाव गुण
ठे अर्थात् एक प्रदेशथी बीजा प्रदेशमा जाता
जे अवकाशने आपे, तेने आकाशद्रव्य कहीये
तेना वे जेद ठे, एक लोकाकाश बीजो अलोका
काश, ए विशेषता ठे हवे कोइ अहीं शका करे के
अवकाश कोने आपे ठे? तेनो उत्तर एठे, के पु-
ग्गल जीवाण एटले पुद्गल तथा जीवने अवकाश
आपेठे ते पुग्गला एटले पुद्गल द्रव्य चउहा एटले
चार प्रकारे ठे पूर्वे कहेला स्वरूप पुद्गल द्रव्यना

खंधा एटले खध, देस एटलेदेश, पएसा एटले प्रदेश,
तथा परमाणुं एटलेपरमाणु, ए जेद चेवएटलेनिश्चये
करीने नायव्वा एटले जाणवा योग्य ठे. ॥ १० ॥

गाथा ११ मीना वूटा शब्दना अर्थ.

सह=शब्द.

अधयार=अधकार

उज्जोअ=उज्जोत, प्रकाश.

पजा=पजा, ज्योति.

ठाया=ठाया, कानि

तवेहि=आतप

आ=वा, अथवा.

वसु=वर्ण

गध=गध

रसा=रस

फासा=स्पर्श

पुगलाणं=पुद्गलो

तु=निश्चे.

लरक्षण=लक्षण

सहंधयार उज्जोअ, पजा ठाया तवेहि आ ॥

वसु गंध रसा फासा, पुगलाणं तु लक्षणं ॥ ११ ॥

शब्दार्थः-शब्द, अधकार, रत्नादिकनो प्रकाश, चंद्र विगेरेनी
कानि, ठाया, तमको अथवा वर्ण गध, रस अने स्पर्श ए
निश्चे पुद्गलोनु लक्षण ठे ॥ ११ ॥

विस्तारार्थ -सचित, अचित, अने मिश्र, ए त्रण प्र-
कारमांना गमे ते सह एटले शब्द, अधयार एटले
अंधकार, तथा रत्नप्रमुखनो उज्जोअ एटले प्रकाश

(१६)

तथा चंद्रमादिकनी पञ्चा एटले ज्योति तथा ठाया
एटले ठाया अने तवेहि एटले सूर्य प्रमुखनो आ
तप,आ एटले वा एटले बीजा नीचला पदार्थ पण
जाणवा वन्न एटले वर्ण, गंध एटले गंध, रसा ए
टले रस, अने फासा एटले स्पर्श एवा गुणवालो
होय अने जे चौद राजलोकमा व्यापक, सरयात
प्रदेशी, असरयात प्रदेशी, तथा अनत प्रदेशीनो
पूर्ण गलन स्वप्नाववान् एवो अखरु पुद्गलास्ति
कायरूप खध, ते खधनो एक ज्ञाग अथवा काऽ
पण न्यून ज्ञागरूप देश, तथा जे केवलीनी बुद्धिये
पण एक ज्ञागना वे ज्ञाग थऽ गके नहीं, एवो अति
सूक्ष्म खधनो अजिन्नज्ञाग निर्विज्ञाज्यरूप ते प्रदेश,
तेनीज ज्यारे खधथी जिन्न कल्पना थाय त्यारे ते
परमाणु कहेवाय ठे ए पुद्गलाण एटले पुद्गलानु
तु एटले निश्चयपणे लक्षण एटले लक्षण ठे ॥११॥

गाथा ११ मीना वृटा शब्दना अर्थ

एगाकोमि-एक क्रोन

मतमदि=मत्सत

लगा=लाव

सत्तदुत्तरि=सी.पोतेर

सहस्रा=हजार. १

दोयसया=बसो.

सोलहिया=सोल अधिक.

आवलिया=आवलिका ,

इग=एक

मुहुत्तम्मि=मुहूर्तमा

एगाकोरि सतसठि, लखा सत्तहुत्तरी स
हस्ता य; दोयसया सोलहिया, आवलिया इ
गमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

शब्दार्थ.-एक कोरि, मरुसठ लाख, मित्योनेर हजार अने उसो
उपर सोल अधिक एटलो आवलीयो एक मुहूर्तने गिपे यायठे

विस्तारार्थ -एगाकोरि एटले एक कोरि, सतसठि
लखा एटले ससठ सास सत्तहुत्तरी सहस्ता ए
टले सित्योतेर हजार, दोयसया एटले बसे अने
सोलहिया एटले सोल उपर, एटली आवलिश्चा
एटले आवलिका इग मुहुत्तम्मि एटले एक मुहूर्त
मा थाय ठे य एटले चकार पादपूर्णार्थ उन्नयान्व
यी अठ्ययठे ह्वे एनो ज्ञावार्थ कहे ठे -आंखना
एक फूरणामा अथवा एरु चपटी बजारवामा अ-
थवा जीर्ण वस्त्र फारुवाने बखते एक तंतुथी बीजे
तंतुये जाय तथा कमलना पाठकाना समूहने यु-

वान पुरुषे ज्ञात्वा साथे विधत्ता एरु पादमाथी
 वीजे पाटमे ज्ञात्वा पोहोचे, एटला वखतमा असं-
 ख्याता समय थड जाय, एटले वख अथवा पत्र
 फारुवाना आरज्जमा सूक्ष्मात् सूक्ष्म क्वाणेरूप जे
 काल होय ठे, जेनो विज्ञाग थड शके नहीं जेनो
 जूत अने ज्विष्य विषे विचार थाय नहीं एटले
 वख अथवा पत्र फारुता प्रथम वर्तमान कालरूप
 अति सूक्ष्म कालनु उल्लघन थडने ते म्यारे जूत
 काल थयो ? कयो वर्तमान काल ठे ? अने कयो
 ज्विष्यकाल थमा योग्य ठे ? तेनु अनुमान थड
 शके नहीं, तेने सर्व लघुकालरूप समय कहे ठे
 एवा असंख्यात समयने आगली कहे ठे एवी
 वसेने ठप्पन आवलीए एरु कुल्लरुज्जव थाय ठे
 ए करता वीजा कोड पण नाना ज्वनी कल्पना
 थड शके नाहि, एमा काश्क अधिक सत्तर कुल्लक
 ज्वमा एरु श्वासोच्छ्वासरूप प्राणनी उत्पत्ति होय
 ठे एवा सात प्राणोत्पत्ति कालने एक स्तोक कहे
 ठे एवा सात स्तोक समये एक लव होय ठे ए

(१९)

वा सीत्योत्तेर खवे वे घनीरूप एक मुहूर्त्त होय ठे-
ते एक मुहूर्त्तने विषे पूर्वे कहेली १६७७७२१६
आवली होय ठे ॥ १२ ॥

गाथा १३ मीना वृटा शब्दना अर्थ

समय=समय

आवली=आवली

मुहुत्ता=मुहूर्त्त

दीहा=दिवस.

पक्का=पक्क-पखवाडीउ

मास=महिना.

वरिसा=वरस.

जणित्त=कष्ट ठे

पलिया=पल्योपम

सागर=मागरोपम

उस्सपिणी=उत्सर्पिणी

सपिणी=अमसर्पिणी.

कालो=कालचक्र

समयाऽवली मुहुत्ता, दीहा पक्काय मास
वरिसाय ॥ जणित्त पलिया सागर, उस्सपि
णी सपिणी कालो ॥ १३ ॥

शब्दार्थः—समय, आवली, मुहूर्त्त, दिवस, पक्क, मास, वर्ष, पल्यो-
पम, सागरोपम, उत्सर्पिणी अमसर्पिणी ए प्रमाणे काल
कसो ठे. ॥१३॥

विस्तारार्थः—अति सूक्ष्मकालने समय एटले समय
कहे ठे, असंरयाता समयने एक आवली एटले-

आवली कहे ठे, एवी १६७७७२१६ आवलीये मु-
 हुत्ता एटले एक मुहुत्त थाय ठे, त्रीस मुहुत्ते दीहा
 एटले एक अहोरात्रिरूप दिवस थाय ठे, पदर अ-
 होरात्रिये पस्का एटले पखवानियु थाय ठे वे प-
 खवानीये मास एटले एक महीना थाय ठे, वार
 महिने वरिसा एटले एक वर्ष थाय ठे, ए रीते
 ज्ञण्ड एटले कहु ठे, तेमज असख्याता वर्षे
 एक पक्षिया एटले पद्योपम थाय, तेवा दस को-
 ना कोनी पद्योपमे सागर एटले सागरोपम थाय,
 तेवा दस कोना कोनी सागरोपम उत्सर्पिणी ए
 टले उत्सर्पिणी अने वीजा दस कोना कोनी सा-
 गरोपमे सर्पिणी एटले अवसर्पिणी थाय, ए वे
 मलीने वीस कोना कोनी सागरोपम कालो ए-
 टले कालचक्र थाय एवा अनता कालचक्रे एक
 पुद्गल परावर्त थाय ए सर्व मनुष्य लोकमा व्य-
 वहारथी काल जाणवो

आ गाथामां वे ठेकाणे चकार ठे, ते पाद पू-
 णार्थ उजयान्वयी ठे. एनो ज्ञावार्थ -पूर्वोक्त जे

कालना जेद कहा, तेथी वखी वीजा पण कालना जेद घणा ठे, ते पण जाणी लेवा जेमके वे मासे एक ऋतु थाय ठे, त्रण ऋतुये एक अयन, वे अयने एक वर्ष, पांच वर्षे एक युग, चोराशी लाख वर्षे एक पूर्वांग, ते एक पूर्वांगने चोराशी लाखे गुणता एक पूर्व थाय ठे, इत्यादिक कालना अनेक जेद ठे, ते सर्व वीजा शाम्बोथी जाणवा.

गाथा १४ मीना वृटा शब्दना अर्थ

परिणामी=परिणामी.

जीवा=जीव

मुत्त=मूर्तिमत्.

सपएसा=समदेशी.

एग=एक.

खित्त=क्षेत्र.

किरीआय=सक्रिय

णिच=नित्य

कारण=कारण.

कत्ता=कर्त्ता

सव्वगय=सर्वगत

इयर=इतर (असर्वगत).

अप्पवेसे=प्रवेशरहित

परिणामि जीव मुत्तं, सपएसा एग खित्त कि रिआय ॥ निच्च कारण कत्ता, सव्वगय इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

शब्दार्थः-परिणामि, जीव, मूर्त, समदेशी, एक, क्षेत्र, क्रिया,

નિત્યપણ, કારણ, કર્તા, સર્વગત, ધર્મી ઝલદા અપ્રવેશી ॥૨૪॥
 વિસ્તારાર્થ -ઠ દ્રવ્યમાં જીવ અને પુદ્ગલ, એ વે દ્રવ્ય પરિણામી એટલે પરિણામી છે, વાકીના ચાર દ્રવ્ય અપરિણામી છે, શ્દ્દા પરિણામનો જ્ઞાવ જાણવો, પરતુ સ્વજ્ઞાવે પરિણામી તો ઠ એ દ્રવ્ય છે, ઠ દ્રવ્યમાં એક જીવ દ્રવ્ય, જીવ એટલે જીવ છે, અને વાકી પાચ દ્રવ્ય અજીવ છે, ઠ દ્રવ્યમા એક પુદ્ગલદ્રવ્ય, મુત્ત એટલે મૂર્તિમત રૂપી છે, વાકીના પાચ દ્રવ્ય, અમૂર્તિમત અરૂપી છે, ઠ દ્રવ્યમા પાચ દ્રવ્ય સપણેસા સપ્રવેશી છે, અને એક કાલદ્રવ્ય અપ્રવેશી છે, ઠ દ્રવ્યમા ધર્મ, અધર્મ અને આકારા એ ત્રણ દ્રવ્ય એગ એટલે એક છે, વીજા ત્રણ દ્રવ્ય અનેક છે, ઠ દ્રવ્યમા એક આકારા, સ્થિત એટલે ક્ષેત્ર છે, વીજા પાચ દ્રવ્ય ક્ષેત્રી છે, ઠ દ્રવ્યમા જીવ અને પુદ્ગલ એ વે દ્રવ્ય, કિરિ આય એટલે સક્રિય છે, વાકીનાં ચાર અક્રિય છે, ઠ દ્રવ્યમા ધર્મ, અધર્મ, આકાશ અને કાલ, એ ચાર દ્રવ્ય ણિચ એટલે નિત્ય છે, વે અનિત્ય છે, યદ્યપિ ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રુવપણે સર્વ પદાર્થ નિત્યાનિત્ય

पणे परिणमे ठे, तथापि धर्मादिक चार द्रव्य सदा अवस्थित, माटे नित्य कह्या, ठ द्रव्यमां धर्मादि पांच द्रव्य, कारण एटले कारण ठे, एक जीवद्रव्य, अकारणरूप ठे, ठ द्रव्यमां एक जीवद्रव्य, कर्ता एटले कर्ता ठे, वीजा पाच अकर्ता ठे, ठ द्रव्यमां एक आकाश, सव्वगय एटले सर्वगत ठे, अने इयर एटले वीजा पांच द्रव्य मात्र, लोकव्यापी ठे, माटे असर्वगत जाणवा, तथा यद्यपि ठ द्रव्य क्षीर नीरपरे परस्पर अवगाढ ठे, तथापि अप्पवेसे एटले प्रवेश रहित ठे एटले कोश पण द्रव्य अन्य द्रव्य मां-तद्रूपपणे थतु नथी माटे प्रवेश रहित ठे, "सद-सगजाव न विजहति" ए वचन माटे ॥ १४ ॥

अर्हीआं ठ द्रव्यनु कांश्क विशेष कहे ठे स्वजावथी गतिक्रिया परिणत एवा जीव अने पुद्गल ए वे द्रव्य ठे. त्यां प्रोतानाः स्वजावने धारवु, पोषवुं, तेने धर्म कहीये, अने अस्ति एटले प्रदेश तेनो काय एटले समूह तेने धर्मास्तिकाय कहिये, ॥३॥तेमज गति क्रिया परिणत जीव तथा पुद्गलने

अथैतन्न दोन स्वज्ञाव लक्षण ते अधर्मास्तिकाय
 ड्रव्य कहिये ॥१॥ तेमज गति क्रिया परिणत जीव
 तथा पुद्गलने अवकाशदान लक्षण स्थिति अतर्गत
 प्रविष्ट कौलक न्याय आकाशास्तिकाय ड्रव्ये जा-
 णवुं ॥३॥ तथा समस्त वस्तु समुदायनुं कलन सं-
 रयान अथवा समयावलिकादिके करी सचेतना
 चेतन पदार्थने जेणे करी कलिये, एटले जाणीये,
 एवो अमूर्त्त, लोकव्यापी, वर्त्तना लक्षण, असंख्य
 समयात्मक, नैश्चयिक समय लोकव्यापी, अनत स-
 मयात्मक कालड्रव्य जाणवुं ॥४॥ तथा पूर्ण गलन
 स्वज्ञाव, ते पुद्गल अनत अणु स्कधपर्यंत जे पर-
 माणवादिक, ते कोश्क ड्रव्यथी गले, वियोग पामे,
 तथा स्वज्ञाव थकी कोश्क ड्रव्य प्रत्ये पुष्टि करे, ते
 पुद्गल ड्रव्य कहिये, तेना जे प्रदेशानो समूह, तेने
 पुद्गलास्तिकाय कहिये ॥५॥ ए असख्यानत प्रदेश
 प्रमाण मूर्त्तड्रव्य सकल लोक व्यापी जाणवो तथा
 इंद्रियादिक दस ड्रव्य प्राण अने ज्ञानादि चतुष्क
 ज्ञाव प्राण प्रत्ये धारित लक्षणे करी जीव ड्रव्य ठेते

(३५)

जीव त्रिकाल स्थायी अविनाशी असंख्य प्रदेशात्मक
जीवास्तिकाय जाणवो. ॥६॥ ए ठ द्रव्य कहां.

एमा काल द्रव्यनुं स्वरूप कांश्क विशेषे कहेते.
काल जे ठे, ते मनुष्य क्षेत्रने विये तद्गतिज्व नाना-
विध ठे, यदुक्तं ज्योति करंमक ग्रंथे ॥ गाथा ॥
लोयाणु नऊणीयं, जोइसचक नणंति अरिहंता ॥
सवे कालविसेसा, जस्त गइ विसेस निप्पन्नां ॥१॥
अहीयां केटलाएक कहे ठे के जीवादिक द्रव्यने
वर्तनादिक जे पर्याय तेहिज काल जाणवो, ते पृथक्
द्रव्यने हेतुये केवी रीते ठे? तेनुं समाधान करे ठे ॥

'जीवद्रव्यने वर्तना, परिणाम, क्रिया अने परा-
वर्त्तादिक, ए सर्व काल व्यपदेशनाक् ठे, तिहां जे
जीवने सादि 'सातादि चार जेदे वर्त्तवुं, ते वर्तना
जाणवी, तथा जे विश्रसा प्रयोगे जीवद्रव्यनी परि-
णति ते परिणाम जाणवो; तथा जूत, ज्ञावि अने
नविप्यत् विशेषणवंत जीवने गमन स्थित्यादिक
कार्यनी चेष्टा, ते क्रिया जाणवी

परापरत्व एटले पूर्वज्ञावि पश्चाद्ज्ञावी परापर इ

त्यादि यदाश्रये द्रव्यने कहेवुं ते ए प्रमाणे वर्तना-
 दिक सर्व द्रव्यना पर्याय ठे ते सर्व कालव्यपदेश-
 नाक् ठे, जेमाटे कथचित्पणे द्रव्यथी अजिन्न द्र-
 व्यनामी पर्याय पण कहिये, ते माटे पर्यायने द्र-
 व्यपणु करते अनवस्था प्रसंग थाय ते माटे, काल
 ते पृथक् द्रव्य नही, वर्तनाद्यात्मक, काल जीवा-
 जीव, द्रव्य पर्यायपणे मानवो, एम जो नहि मा-
 नीये तो आकाशनीपेरे सर्व व्यापि कालास्तिकाय
 मानवो ? एवो परवादिनो आशय ग्रहण करी शि-
 प्ये पृथक्, त्यारे गुरु उत्तर वहे ठे, के हे देवाण-
 प्रिये । ए आप्त वचन नहि केमके सिद्धातमा पाच
 अस्तिकाय कहे ठे, अने ठे कालद्रव्य पृथक् क-
 हु ठे जे प्रदेशनु बहुपणु होय, तेने अस्तिकाय
 कहिये, अने कालने विपे प्रदेशनु बहुपणु नथी,
 जे माटे कालने विपे मात्र वर्तमान एक समय प्र-
 रूपणा ठे, अने अनागत समयनी अनुपपत्ति ठे.

गाथा १५ मीना वृदा शब्दना अर्थ.

सा=शातावेदनीय
 उच्चगोत्र=उच्चगोत्र.
 मणुडग=मनुष्यद्विक
 सुरदुग=सुरद्विक
 पंचिदिजाइ=पंचेदि जाति
 पणदेहा=पाच शरीर.

आइ=आदीना.
 तितणु=त्रण शरीर.
 उरगा=उपांग (अगोपांग)
 आइम=आदीम-पहेलुं.
 सघयण=सघयण
 मठाणा=सस्थान

सा उच्चगोत्र मणुडग, सुरदुग पंचिदिजा-
 इ पणदेहा ॥ आइति तणुणुवंगा, आइम
 संघयण संठाणा ॥ १५ ॥

शब्दार्थः-शातावेदनीकर्म, उच्चगोत्र, मनुष्यद्विक, सुरद्विक, पंचे
 दिजाति अने पाच देह तेमा पहेला त्रण शरीरना अंग अने
 उपांग, अने पहेलु [वज्ररूपजनाराच] सघयण तथा पहेलु
 (समचतुरस्र) सस्थान

विस्तारार्थ -पहेलुं साधु विगेरेने अन्न दीधार्थी, वीजुं
 पाणी दीधार्थी, त्रीजु रहेवाने स्थानक देवाथी, चोथुं
 सूवाने पाट प्रमुख देवाथी, पांचमु पहेरवा थोढवाने
 वस्त्रादिक दीधार्थी, ठलुं ते विपे मने करी शुभ संकटप
 कर्याथी, सातमुं वचने करी स्तुत्यादिक कर्याथी,

आठमु क्रायाये करीसेवा कर्याथी, तथा नवमुहाये करी
 नमस्कारादिक कर्याथी ए नव प्रकारे पुण्य वधाय ठे.
 तेने वेंतालीश प्रकारे जीव जोगवे ठे ते कहे ठे.
 १ सा एटले सातावेदनीय ते जेना उदये जीव,
 सुखनो अनुभव करे, २ उच्चगोत्र एटले उच्चगोत्र ते
 उच्चकुलमां जन्म धारण करीने लोकने विषे पूजा
 प्रतिष्ठादिकने पामे ३ मण्डुग एटले मनुष्यद्विक
 ते जेना उदये मनुष्यनी गति तथा ४ मनुष्यनी
 अनुपूर्वीनी प्राप्ति थाय जेना उदये ५ देवनी गति
 तथा ६ देवनी अनुपूर्वी पमाय ठे ते, (वक्रगतिये
 परभवमा जता बलदने नाथ घालीने सीधो चलाव
 वानी पेठे जेथी उपजवाने स्थानके पहोंची शकाय,
 तेने अनुपूर्वी कहे ठे) ए सुरदुग एटले सुरद्विकरूप
 नामकर्म कहिये ७ पचिदिजाइ एटले पचेंद्रियजाति
 नामकर्म कहिये जेना उदये पाच शरीरनी प्राप्ति
 थायठे, ते कहेठे.—८ औदारिक नामकर्म एटले जेथी
 औदारिक शरीर योग्य पुद्गल ग्रहण करीने तथा
 तेने शरीरपणे परिणमावीने जीव, पोताना प्र

देशनी साथे मेलने ठे ते. एवी रीते सर्व शरीरने विषे योजना करवी. ए वैक्रिय शरीरना वे जेद ठे. एक औपपातिक ते देवता तथा नारकीने होय ठे. बीजो लब्धि प्रत्ययीठ ते तिर्यंच तथा मनुष्य लब्धिवंतने होय ठे. १० चौद पूर्वधर मुनिराज तीर्थकरनी ऋद्धि प्रमुख जोवाने अर्थे एक हाथ प्रमाण देह धारण करे ते आहारक शरीर ११ आहारनुं पचन करनार तथा तेजोलेझ्यानो हेतु ते तैजस शरीर, १२ अने कर्मण शरीर ते कर्मना परमाणु आत्मप्रदेशनी साथे मल्यां ठे एम जाणवुं, ए पणदेहा एटले पच शरीररूप ना सकर्म कहिये जेना उदयथी कहेलां पांच शरीरमाना आइ एटले आदिनां औदारिक, वैक्रिय तथा आहारक ए तितणु एटले त्रण शरीरना वे बाहु, वे ऊरु, एक पृष्टिका, एक मस्तक, एक उदर, तथा एक हृदय, ए आठ अंग ठे, अने अंगुलि प्रमुख उपांग ठे, तथा रेषादिक अगोपांग ठे, एटले १३ औदारिक अगोपांग, १४ वैक्रिय अंगोपांग, १५ आहारक अंगोपांग अने तैजस शरीर, तथा कर्मण शरीर, ए वेने अंगोपांग नथी, ते

थी पहेलां त्रण शरीरनाज अंगोपांग कहां ठे, तेने उवगा एटले अंग, उपांग, तथा अंगोपांगरूप नामकर्म कहिये १६ जेना उदयथी ठ सघयणमानु आश्म एटले पहेलु वज्ररूपजनाराच नामनु सघयण प्राप्त थाय-ठे, तिहा वज्र एटले खीली, रूपन एटले पाटो तथा नाराच एटले वे पासा मर्कटबंध, एटले मर्कटबंध ते उपर पाटो ते उपर खीली एवो हारुनो निचय एटले समुदाय होय, तेने सघयण एटले अस्थिनिचय सघयणरूप कहिये १७ जेना उदयथी पोते पर्यकासन करी वेठा ठता समचतुरस्र चारं धाजु सरखी आकृति थाय अने पोताना अगुल प्रमाणवने एकसोने आठ अंगुलप्रमाण शरीर जराय, तेने सठाणा एटलेठ सस्थान-मानु पहेलु समचतुरस्र संस्थान कहिये ॥ १५ ॥

गाथा १६ मीना वृटा शब्दोना अर्थ

वएणचउक्का=वर्ण चतुष्क

अगुरु लहु=प्रगुर लघु

परघा=पराघात.

उसासा=श्वासोश्वास

आयव=आतप

उड्डोअ=उग्रोत

मुजखगइ=मुज विहायोगति

निमिण=निर्माण

तसदस=त्रसदशक

मुर (आठ)=मुरायुष्य.

नर (आठ) = नरायुष्य.

तिरिआठ = तिर्यचायु

तिर्यपर = तीर्थकर

वसु चञ्जका गुरु लघु, परधा ऊसास आय
वुज्जोअं ॥ सुजखगइ निमिण तसदस, सुरनर
तिरिआठ तिर्यपरं ॥ १६ ॥

शब्दार्थ - वर्णचतुष्क नामकर्म अगुरु लघु, पराघात, श्वासोश्वास,
आताप, उद्योत, इस, वृषजनी पेटे सारी चाल ते शुभविहायो
गति, सुघाटरूप निर्माण, त्रसदशक, देव, मनुष्य अने तिर्य-
चनु आयुष्य अने तीर्थकर नामकर्म ॥ १६ ॥

विस्तारार्थ - जेना उदयथी १७ श्वेत, रक्त अने पीत
रूप शुभवर्ण, १९ एक सुरजि गंधरूप शुभ गंध; २०
आंधिल, मधुर अने कषायेल रूप शुभरस, तथा २१
लघु, मृडु, उष्ण अने स्निग्धरूप शुभ स्पर्श, ए चार
पदार्थ पुण्यप्रकृतिने अर्थे प्रशस्त जाणवा एउनी
प्राप्ति थाय ठे तेने वर्णचञ्जका एटले वर्ण चतुष्क-
रूप कहिये

२२ जेना उदयथी मध्यम वजनदार शरीरनी प्राप्ति
थाय, एटले लोहनी पेटे अति जारे पण नही अने

आकमाना कपासनी पेठे अति हलको पण नहीं किंतु मध्यम परिणामी होय, तेने अगुरु लहु एटले अगुरु लघु नामकर्म कहिये.

३३ परघा एटले पराघात नामकर्म ते जेना उदयथी वीजा बलवान्ने अति दु सहनीय ठतां पोते गमे तेवा बलीयाने जीतवाने समर्थ थाय ठे, एवा बलनी प्राप्ति थाय ते

३४ जेना उदयथी सुखपूर्वक श्वासोश्वास लेइ शकाय, कांइ पण विघ्न पमे नहीं, तेने उसास एटले श्वासोश्वास नामकर्म कहिये

३५ आयव एटले आतप नामकर्म ते जेना उदयथी सूर्यना विवनी पेठे परने ताप उत्पन्न करवाना हेतु रूप तेजोयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय ठे ते

३६ उज्जोत्थं एटले उद्योतनामकर्म ते जेना उदयथी चंद्रविवनी पेठे परने शीतलता उत्पन्न करवाना हेतु रूप तेजोयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय ते

३७ सुज्जखगइ एटले शुज्जविहायो गति नामकर्म कहिये, ते जेना उदयथी वृषज तथा हसनी पेठे सारी

चलनशक्तिनी प्राप्ति थाय ते.

२७ निमिण एटले निर्माण नामकर्म ते जेना उदयथी सूधारनी पेठे पोताना शरीरना सर्व अत्रयव योग्य स्थले गोठववानी शक्ति प्राप्त थाय ते

२८ थी ३७ जेना उदयथी त्रस दसको एटले त्रसादि दस प्रकृति जे आगल कहेवामा आवशे तेनी प्राप्ति थाय ठे तेने तसदस एटले त्रसदशक नामकर्म कहिये तेनु विवरण आगलनी गाथामां कहेवाशे

३९ जेना उदयथी देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय ठे तेने सुर एटले सुरायुष्यरूप कहिये

४० जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय ठे, तेने नर एटले नरायुष्यरूप कहिये

४१ तिरिआउं एटले तिर्यचायुष्यरूप कहिये ते जेना उदयथी तिर्यचना आयुष्यनी प्राप्ति थाय ते.

४२ जेना उदयथी त्रण जुवनने पूज्यपणु थाय ठे, तेने तिठयरं एटले तीर्थकर नामकर्म कहिये. ए कर्मनो उदयु, मात्र केवलीनेज थाय ठे.

गाथा १७ मीना वृटा शब्दना अर्थ

तस=त्रस.

वायर=वादर

पज्जत्त=पर्याप्ति

पत्तेअ=प्रत्येक

धिर=स्थिर.

सुज्ज=सुज

सुज्जग=सौजाग्य

सुस्सर=सुस्वर।

आइज्ज=आदेय

जस=जम, यश

तसाइ=त्रसादि

दसग=दस प्रकृति.

इम=आ, ए.

होइ= होय ठे, ठे

तस वायर पज्जत्तं, पत्तेय धिर सुज्जं च सु-
ज्जगं च ॥ सुस्सर आइज्ज जसं, तसाइ दसगं
इमं होइ ॥ १७ ॥

शब्दार्थ - त्रस, वादर, पर्याप्ति, प्रत्येक, स्थिरता, सुज, सौजाग्य,
सुस्वर, आदेय अने जस पुण्यना जेदमा आ त्रस विंगेरे
दस नामकर्म होय ठे ॥ १७ ॥

विस्तारार्थ - १ तस एटले त्रस नामकर्म ते जेना उद-
यथी जीवने वेन्द्रियना शरीरनी प्राप्ति थाय, अर्थात्
एक इन्द्रियनु शरीर पामे नहीं

२ वादर एटले वादर नामकर्म ते जेना उदयथी
वादर शरीरनी प्राप्ति थाय, पण जे दृष्टिये करी दे-
खाय नहीं एवा सूक्ष्म शरीरने न पामे ते

३ पञ्च-एटले पर्याति नामकर्म ते जेना उदयथी
 आप आपणी पर्याति पूरी करे ते पर्याति वे प्रकारे
 ठे, एक लब्धि, वीजी करण

४ पत्तेअ एटले प्रत्येक नामकर्म ते जेना उदयथी
 औदारिक अथवा वैक्रिय प्रमुख जिन्न जिन्न शरीरनी
 प्राप्ति थाय, पण घणा जीवो वच्चे एक शरीर न पामे.

५ धिरं एटले स्थिर नामकर्म ते जेना उदयथी श-
 रीरना दंतादिक अवयवोने स्थिरतानी प्राप्ति थाय ते.

६ सुभं एटले शुभ नामकर्म ते जेना उदयथी श-
 रीरना सर्व अवयव, सारा होय, अथवा नाजिना उ-
 परनुं शरीर सारुं होय

७ सुजग एटले सौजाग्य नामकर्म ते जेना उदय
 थी सर्व लोकने प्रिय थाय

८ सुस्तर एटले सुस्वर नामकर्म ते, जेना उदयथी
 वाणीमां कोयलनी पेष्ठे मधुरता थाय.

९ आशुक्क एटले आदेय नामकर्म ते, जेना उदयथी
 लोकने विषे माननीय वचन थाय

१० जसं एटले यशो नामकर्म ते, जेना उदयथी

खोकने विषे यश कीर्ति थाय एवी रीते तसांइदसंगं
एटले त्रस आदिक दस प्रकृतिनुं दशकं, इमें एटले
ए पुण्यना जेदमा होइ एटले ठे ते पूर्वोक्त वत्रीस
मा जेलीये त्यारे वेंतालीस थाय ए पुण्य तत्वेना वें
तालीस जेद कख्या वे चकार पादपूर्णार्थे ठे. ॥ १७ ॥

इति श्री पुण्यतत्त्व विचार समाप्तं
गाथा १७ मीना वृटा शब्दना अर्थ

नाण=ज्ञानावरणीय.

अतराय=अतराय.

दसग=दश प्रकार.

नव=नव

वीए=त्रीजा एटले दर्शनावर-
णीयना

नीअ=नीचगोत्र.

असाय=अशातावेदनीय

मिच्छत्त=मिच्छयात्त्व मोरनीय.

थावरदस=स्यावरदशकं.

नरयतिगं=नरकत्रिक.

कसाय=कषाय

पणवीस=पचीस

तिरियदुगं=तिर्यक्तदिक.

नाणंतरायदसगं, नव वीए नीअसायमि-
च्छत्तं ॥ थावरदस निरयतिगं, कसायपणवीस
तिरियदुगं ॥ १७ ॥

शब्दार्थ - ज्ञानावरणीयनां पाच अने अतरायनां पाच एम वजे
मलीने दस पापकर्षना जेद, वीजां दर्शनावरणीय कर्मनां नव

जेद, नीचगोत्र पापकर्म, आशुत, वेदनी पापकर्म, मिथ्यात्व पापकर्म, स्यावर, दशक पापकर्म, नरकत्रिक पापकर्म, पञ्चीस कर्म यरूप पापकर्म, त्रियेचद्विक पापकर्म ॥ १८ ॥

विस्तारार्थः—प्राणातिपातं, मृषावादं, अदत्तादानं, मैथुनं, परिग्रहं, क्रोधं, मानं, माया, लोभं, रागं, द्वेषं, कलहं, अन्योख्यानं, पैशुन्यं, रतिश्च रतिपरिवादं, मायामोक्षो, तथा मिथ्यात्वशैल्यं, एं अठार प्रकारे पाप वधायं ठे, अने व्याशी प्रकारे जोगवाय ठे, ते व्याशी प्रकार कहे ठे—

१ मति ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी पांच इंद्रियं, तथा मनोद्वाराए जे नियंत वस्तुनुं ज्ञान थायं ठे, एवा प्रथम मतिज्ञाननु जे आठ्ठादन थायते.

२ श्रुत ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी शास्त्रानुसारे जे ज्ञान थायं ठे एवा श्रुतज्ञाननुं आठ्ठादन थाय ते.

३ अवधि ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी इंद्रियादिकनी अपेक्षा विना, आत्मद्रव्यने जे साक्षात् रूपी द्रव्यने जाणवानुं जे ज्ञान थायं ठे, एवा अवधि ज्ञाननुं जे आठ्ठादन थाय ते.

४ मन पर्यव ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी सृष्टी पर्वेन्द्रियना मनोगत जाव जाणवानु जे ज्ञान थाय ठे, एवा मन पर्यव ज्ञाननु जे आठादन थाय ठे ते

५ केवल ज्ञानावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी पूर्वोक्त चार ज्ञान रहित जे एकदु निरावरण ज्ञान होय, एवा केवल ज्ञाननु जे आठादन थाय ते. एवी रीते पाच प्रकारना ज्ञानने जे आठादन करे तेने नाण एटले ज्ञानावरणीय पापकर्म कहिये

६ दानातराय पापकर्म एटले जेना उदयथी पोताना घरमा देवा योग्य वस्तु ठता तथा दाननु फल जाणता ठतां पण आपी शकाय नही ते

७ दातातराय पापकर्म एटले जेना उदयथी दातार ठता, दातारना घरमा वस्तु ठता, मागनार माह्यो ठता, पण जे यचित वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते

८ जोगातराय तथा उपजोगातराय पापकर्म एटले जेना उदयथी पोते यौवन ठतां, सुरूप ठता, तथा, जोगोपजोग वस्तुनी प्राप्ति थड ठतां, पण ते

ज्ञोगवाद्, न शकाय ते पुष्पादि, पदार्थ- जे एकवार
 ज्ञोगवाय ठे, तेने ज्ञोग कहे ठे अने वस्त्रादिक पदार्थ
 जे वारंवार ज्ञोगवाय ठे तेने उपज्ञोग कहिए ए
 वेनो अंतराय ते

१० वीर्यांतराय पापकर्म एटले जेना उदयथी पोते
 यौवन, रोगरहित, तथा बलवान ठतां पण पोतानी
 शक्ति फोरवी शके नहीं

एवी रीते पाच प्रकारे जे आरु आवे, तेने अंतराय
 एटले अंतराय नामनुं पापकर्म कहिये. पहिला पांच
 तथा ए पांच मलीने दसग एटले दस प्रकार थया.
 हवे नववीए एटले बीजा नव प्रकार दर्शनावरणीय
 कर्मना जाणवा तेमां चार जेद दर्शनना, तथा पाच
 जेद निद्राना कहेठे (सामान्य उपयोगने दर्शन कहेठे)

११ चक्षुदर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी
 आंखे करी जे रूपनुं सामान्यपणे ग्रहण थाय, एवा
 चक्षुदर्शननुं आछादन थाय ते.

१२ अचक्षुदर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उद-
 यथी, चक्षु विना चार इंद्रिय तथा मने करी पोतपो

तौना विषयनु जे सामान्यपणे ग्रहण थाय, एंवा अचक्षुदर्शननुं जे आछादन थाय ते

१३ अवधि दर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी सामान्यपणे जे रूपी द्रव्यनुं मर्यादापणे ग्रहण थायते, एवा अवधि दर्शननु जे आछादन थाय ते.

१४ केवल दर्शनावरणीय पापकर्म एटले जेना उदयथी समस्त वस्तुनु जे सामान्यपणे देखवु थायते एवा केवल दर्शननु जे आछादन थाय ते

१५ निद्रारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी निद्रावस्था थई गया पठी सुख पूर्वक जागृदवस्थानी प्राप्ति थाय ते

१६ निद्रानिद्रारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी निद्रावस्था थई गया पठी दुःखपूर्वक जागृदवस्थानी प्राप्ति थाय ते

१७ प्रचलारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी वेसेतां तथा ऊठता निद्रा आव्यां करे

१८ प्रचला प्रचलारूप पापकर्म एटले जेना उदयथी हरता फरता पण निद्रा आवे ते

(५१)

१९ श्रीणद्धीरूप पापकर्म एटले जेना उदयथी दि-
वसनु चिंतवेळुं कार्य रात्रिने विपे निद्रा समये जा-
गृतनी पेठे थाय ते श्रीणद्धी निद्राना समये प्राणी
वासुदेवना अर्द्धवलयुक्त होय ठे, अने ते जीव नरक
गामी जाणवो.

२० जेना उदयथी पोते रूपवान तथा धनवान
ठंता नीच कुलने विपे उत्पन्न थाय, तेने नीच एटले
नीचैर्गोत्ररूप पापकर्म कहिये ए नीच गोत्ररूप पा-
पकर्म निंदापात्र ठे

२१ जेना उदयथी दुःखनो अनुभव थाय, तेने अ-
साय एटले अशातावेदनी पापकर्म कहे ठे.

२२ मिष्ठत्त एटले मिथ्यात्व मोहनीय पापकर्म
ते जेना उदयथी वीतरागना वचननी विपरीत स-
द्दहणा थाय

२३-२४ जेना उदयथी स्थावरदशकनी प्राप्ति थाय,
तेने थावरदस एटले स्थावरदशक नामनुं पापकर्म क-
हीये. ते आगल कहेवाशे, माटे अर्ही नाममात्रदर्शी वुंठे.

२३-२५ जेना उदयथी नरकनी गति, नरकनी आ

नुपूर्वी, तथा नरकनु आजखु प्राप्त थाय, तेने नरय-
तिग एटले नरकत्रिक पापकर्म कहिये

कसायपणवीस एटले पच्चीस कषायरूप पापकर्म-
ना पच्चीस प्रकार ठे, तेउमा सामान्यथी तो पहेला
सोल कषाय अने बीजा नवनोकषाय, एवा वे प्रकार
ठे तेउनु अनुक्रमे वर्णन करे ठे

३६-३९ अनंतानुवधी पापकर्म एटले जेना उदयथी
अनत ससार वधाय, एना चार प्रकार ठे, क्रोध, मान,
माया अने लोभ ए जावज्जीवलगी कायम रहे, स-
म्यक्त्व आववा न दीये, अने अते नरकने विषे प-
होचारे, ए क्रोव पर्वतनी लींटी जेवो ठे, मान पा-
षाणना थानला जेवु ठे, माया वासना मूल जेवीठे,
ने लोभ करमजना रंग जेवो ठे

४०-४३ जेना उदयथी थोका प्रत्यारयाननी पण
प्राप्ति नें थाय, तेने अप्रत्यारयानीय पापकर्म कहिये-
एना क्रोध, मान, माया ने लोभ ए चार जेद ठे ए एक
वर्षसुधी कायम रहे ठे, देशविरतिपण आववा दे नहि
ने अते तिर्यंचनी गतिनी प्राप्ति करावे ए क्रोध, सुकाए-

ला तलावनी रेखा जेवो ठे, मान हाकाना थांजला जेवुं ठे, माया मेंढाना शिंगना जेवी ठे, तथा लोन्न कर्दम एटले कादवना रंग जेवो ठे.

४४-४९ प्रत्याख्यानीय पापकर्म एटले जेना उदयथी सर्व विरतिरूप प्रत्याख्यानने आद्यादन थाय ते एना क्रोध, मान, माया ने लोन्न ए चार जेद ठे, ए चार मास सुधी कायम रहे ठे. सर्व विरतिरूप चारित्रने घात करे, तथा ठेवट मनुष्यनी गति उत्पन्न करावेठे. ए क्रोध रेतीनी रेखा जेवो ठे, मान काष्ठना थांजला जेवुं ठे, माया बलदना सूत्रनी रेखा जेवी ठे, अने लोन्न काजलना रंग जेवो ठे

४७-५१ जेना उदयथी चारित्र धारण करनार थोरुक दीपे, तेने सज्वलन पापकर्म कहिये. एना पण क्रोध, मान, माया ने लोन्न ए चार जेद ठे ए पंदर दिवस सुधी कायम रहे ठे यथाख्यात चारित्रने आवरण करे अने देवगतिनी प्राप्ति करावे ठे. ए क्रोध पाणीनी रेखा जेवो ठे. मान नेतरना थांजला जेवुं ठे.

माया वांसनी ठाल जेवी ठे, अने खोज हलदरना
रग जेवो ठे

एवी रीते चार चार जेदे कपाय कहेता सोल कपा-
यनु वर्णन कर्युं. ह्ये नवनोकपाय कहे ठे जे कपा-
यने सहचारी होय ते नोकपाय

५२-५३जेना उदयथी एक वस्तुनिमित्ते तथा बीजीपर
निमित्ते, ए वे प्रकारथी हास्य, रति, अरति, शोक, जय
तथा दुःखानी उत्पत्ति थाय, तेने हास्यपटकूरूप पा-
पकर्म कहीए

५४ जेना उदयथी स्त्री जोगववानी इच्छा थाय तेने पु-
रुषवेदरूप पापकर्म कहीने

५५ जेना	पुरुष जे	इच्छा थाय
तेने स्त्री	ठे	वकरीनी

आनुपूर्वीनी प्राप्ति थाय तेने तिरिय दुग एटले तिर्यंच
द्विक नामकर्म कहाए ॥ १७ ॥

गाथा १९ मीना वूटा शब्दना अर्थ.

इग=एकेंद्रिय जाति.

बि=बेइद्रिय जाति.

ति=तेइद्रिय जाति.

चउ=चतुरिंद्रिय जाति.

जाईओ=जातिओ.

कुखगइ=अशुज विहायोगति

उवघाय=उपघात

हृति=होयठे

पावस्स=पापना.

अपसठ्य=अप्रशस्त.

वसुचउ=वर्ण चतुष्क

अपढम=अप्रयम (पहेला सि-
वायना).

सघयण=सघयण.

सठाणा=सम्यान

इग वि ति चउ जाईउ, कुखगइ उवघाय
हुंति पावस्स ॥ अपसठं वसु चउ, अपढम
संघयण संठाणा ॥ १९ ॥

शब्दार्थः—एकेंद्रिय, बेइद्रिय, तेरिंद्रिय अने चौरेंद्रिय जातिरूप पा-
पकर्म, उट विगेरेनी पेठे अशुज विहायोगति पापकर्म, उ-
घात नाम पापकर्म, माठा एवा रूप, रस, गध अने स्पर्शरूप
पापकर्म, तेमज पहेला सघयण अने पहेला सम्यान विनाना
बीजा सघयण अने सम्यानरूप पापकर्म.

माया वासनी ठाल जेवी ठे, अने खोज हलदरना रंग जेवो ठे

एवी रीते चार चार जेदे कपाय कहेतां सोल कपायनु वर्णन कर्युं हवे नवनोकपाय कहे ठे जे कपायने सहचारी होय ते नोकपाय

५२-५३जेना उदयथी एक वस्तुनिमित्ते तथा बीजीपर निमित्ते, ए वे प्रकारथी हास्य,रति,अरति, शोक,जय तथा डुगठानी उत्पत्ति थाय, तेने हास्यपटकूरूप पापकर्म कहीए

५४ जेना उदयथी स्त्री जोगववानी इष्टा थाय तेने पुरुषवेदरूप पापकर्म कहीये, एनेतृणनाअग्निनीउपमाठे

५५ जेना उदयथी पुरुष जोगववानी इष्टा थाय तेने स्त्री वेदरूप पापकर्म कहीए, एने वकरीनी खींकीउनी अग्निनी उपमा ठे

६० जेना उदयथी स्त्री तथा पुरुष, ए वझेने जोगववानी अजिलापा थाय, तेने नपुसक वेदरूप पापकर्म कहीए एने नगरदाहनी उपमा ठे

६१-६२ जेना उदयथी तिर्यञ्जनी गति तथा तिर्यंचनी

६९-७२ जेना उदयथी चार अशुभ वर्णादिक एटले काळो रंग अने नीलो रंग, वे अशुभवर्ण, डुरजिगंध, ते अशुभगंध, तीखोरस ने कट्टकरस, ए वे अशुभ रस, गुरु, खर, शीत तथा लूखो, ए चार अशुभ फ रस, ए सर्व मलीने नव अशुभ थाय, पण सामान्ये चार गणिये एउनी प्राप्ति थाय ठे, तेने अपसववण चउ एटले अप्रशस्त वर्ण चतुष्कनामे पापकर्म कहीए-

७३-७७ जेना उदयथी ठ संघयणमांना प्रथम संघय- ण विना पांच संघयणनी प्राप्ति थाय ठे, जेना वे पासा मर्कटवध उपर पाटो ए वे होय पण वज्र ते खीली न होय, तेने ऋषनाराच कहे ठे, जेने केवळ मर्कट वधज होय पण पाटो तथा खीली न होय तेने नाराच कहे ठे, जेने एक पासे मर्कटवध होय, तेने अर्द्धनाराच कहे ठे, ज्यां माहोमांहे हामकाने एक खीलीनो धध होय, तेने कीलिका कहे ठे. अने जे खीली विना माहोमांहे अमस्तां अरुकी रह्या होय, तेने ठेवडु कहे ठे. ए पाच संघयणनी जेणेकरी प्राप्ति थाय ठे, तेने अपढमसंघयण एटले अप्रथम संघ

विस्तारार्थ -६३ पृथ्वीकायादिक पांच स्थावरनी जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय, तेने 'इग एटले एकेंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६४ शख प्रमुख जीवोनी जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय तेने वि एटले वैद्विय जातिरूप पापकर्म कहिये

६५ जू माकणादिक जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय ठे तेने ति एटले तेंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६६ वींठी आदिक जातिना शरीरनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय ठे तेने चउजाईउं एटले चतुरिद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये

६७ उट अथवा गधेमानी पेठे सराव गतिनी प्राप्ति जेना उदयथी थाय ठे तेने कुखगइ एटले अशुचवि हायोगनि नामकर्म कहिये

६८ जेना उदयथी पोतानां जीन, दांत, हरस, र सोखी प्रमुख अग्रयवे करी पोतेज हणाय ठे तेने उ वघाय एटले उपघात नामकर्म कहिये

गाथा २० मीना वृटा शब्दना अर्थ.

थावर=स्यावर.

सूहुम=सूद्धम.

अपज्ञ=अपर्याप्त

साधारण=साधारण

अथिर=अस्थिर

असुज=अशुज

इजगाणि=इर्जाग्य

इस्सर=इःस्वर.

अणाइज्ज=अनादेय

अजस=अजश

यावरदसग=स्यावरदशक

विवज्जय्य=विपरीतार्थ

थावर सुहुम अपज्ञं, साधारण मथिरम
सुजइजगाणि ॥ इस्सरणाइज्जजसं, थावर द-
सगं विवज्जय्यं ॥ २० ॥

शब्दार्थ—स्यावर नामकर्म, सूद्धम नामकर्म, अपर्याप्त नामकर्म,
साधारण नामकर्म, अस्थिर नामकर्म, अशुज नामकर्म, इर्जाग्य
नामकर्म, इ स्वर नामकर्म, अनादेय नामकर्म, अजश नामकर्म,
आ स्यावर दशक (त्रस दशकथी) विपरीतार्थ वे ॥२०॥

विस्तारार्थ -१ थावर एटले स्यावर नामकर्म ते जेना
उदयथी स्यावरपणु प्राप्त थाय तेथी जो तापाटिके
पीनाय तोपण त्यांथी खशी शकाय नहीं. २ सुहुम
एटले सूद्धम नामकर्म ते जेना उदयथी दृष्टिने अगो
चर एवा सर्व लोकमां व्यापी रहेला सूद्धमपणानी

यणरूप नामकर्म कहीए

३७-७२ जेना उदयथी ठ सस्थानमाना पहेला संस्थान विना वीजा पांच सस्थाननी प्राप्ति थाय ठे. तिहा जे वरुवृद्धनी पेठे नाजिनी उपर सुलक्षण युक्त, तथा नाजिनी नीचे निर्लक्षणयुक्त होय, तेने न्यग्रोध परिमरुल सस्थान कहे ठे, जे नाजिनी नीचेनु अग सारु, अने नाजिनी उपरनु अग नरसुं होय ते तेने सादि सस्थान कहे ठे, उदर प्रमुख लक्ष णोपेत अने हाथ, पग, माथु, कटी, प्रमाण रहित होय, तेने ब्रामन सस्थान कहे ठे, जे हाथ, पग, माथु, कटी प्रमुख प्रमाणोपेत अने उदर प्रमुख हीन होय, तेने कुब्ज सस्थान कहे ठे, जे सर्व अवयव अशुज होय, तेने हुमक सस्थान कहे ठे ए पांच सस्थाननी प्राप्ति. थाय ठे तेने अपढमसठाणा एटले अप्रथम सस्थानरूप नामकर्म कहीए एवी रीते सर्व मखीने पावस्त एटले पापतत्त्वना व्याशी प्रकार ते हुति एटले ठे १९

गाथा २० मीना वृटा शब्दना अर्थ.

थावर=स्यावर.

सुहुम=सूक्ष्म.

अपज्ञ=अपर्याप्त

साधारण=साधारण

अथिर=अस्थिर.

अथुज=अथुज

इजगाणि=इजांग्य.

इस्सर=इःस्वर.

अणाइज्ज=अनादेय

अजस=अजश

थावरदसग=स्यावरदशक

विवज्जठं=विपरीतार्थ

थावर सुहुम अपज्ञं, साधारण मथिरम
सुजइजगाणि ॥ इस्सरणाइज्जजसं, थावर द-
सगं विवज्जठं ॥ २० ॥

शब्दार्थ-स्यावर नामकर्म, सूक्ष्म नामकर्म, अपर्याप्त नामकर्म,
साधारण नामकर्म, अस्थिर नामकर्म, अथुज नामकर्म, दीर्जांग्य
नामकर्म, इःस्वर नामकर्म, अनादेय नामकर्म, अजश नामकर्म,
आ स्यावर दशक (त्रस दशकथी) विपरीतार्थ ठे ॥२०॥

विस्तारार्थ -१ थावर एटले स्यावर नामकर्म ते जेना
उदयथी स्यावरपणुं प्राप्त थाय तेथी जो तापादिके
पीणाय तोपण त्यांथी खशी शकाय नहीं. २ सुहुम
एटले सूक्ष्म नामकर्म ते जेना उदयथी हृष्टिने अगो
चर एवा सर्व लोकमां व्यापी रहेला, सूक्ष्मपुणानी

प्राप्ति थाय, ते पण पृथिव्यादिकं पांचज जाणवा ३
 अपक्क एटले अपर्याप्त नामकर्म कहीए, ते जेना उद
 यथी स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी कर्या विनाज मरण पांमे.
 ४ साधारण एटले साधारण नामकर्म ते जेना उद
 यथी अनत जीव वच्चे एक श्रौदारिक शरीरनी पाप्ति
 थाय, एवी निगोदावस्था ते ५ अस्थिर एटले अस्थिर
 नामकर्म ते जेना, उदयथी शरीरमा दतादिक अवयव
 अस्थिर होय ते ६ अशुभ एटले असुभ नामकर्म ते
 जेना उदयथी नाजिनी नीचेना अगनो जाग सारो
 न होय, पगादिकने स्पर्श आगलो रोप करे ते ७ दु
 जगाणि एटले दुर्जाग्य नामकर्म ते जेना उदयथी सर्व
 लोकने अलखामणो लागे ते ८ दुस्सर एटले दु खर
 नामकर्म ते जेना उदयथी कागनादिकनी पेठे कानने
 कटुक लागे एवा स्वरनी प्राप्ति थाय ठे ते ९ अणा
 इक्क एटले अनादेय नामकर्म ते जेना उदयथी लो
 कने विषे तेनु बोळवु कोइ मान्य करे नहीं ते १० अज
 स एटले अयश नामकर्म ते जेना उदयथी लोकमा
 अपकीर्ति थाय, पण कोइ यश बोले नहीं ते ॥

प्राप्ति थाय, ते पण पृथिव्यादिकं पाचज जाणवा. ३
अपक्क एटले अपर्याप्त नामकर्म कहीए, ते जेना उद
यथी स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी कर्या विनाज मरण पामे.
४ साधारण एटले साधारण नामकर्म ते जेना उद
यथी अनत जीव वच्चे एक औदारिक शरीरनी पाप्ति
थाय, एवी निगोदावस्था ते ५ अचिर एटले अस्थिर
नामकर्म ते जेना उदयथी शरीरमा दतादिक अवयव
अस्थिर होय ते ६ अद्भुत एटले असुत नामकर्म ते
जेना उदयथी नाप्तिनी नीचेना अगना ज्ञाग सारो
न होय, पगादिकने स्पर्श आगलो रोष करे ते ७ दु
र्जगण एटले दुर्जाग्य नामकर्म ते जेना उदयथी सर्व
लोकने अलखामणो लागे ते ८ दुस्तर एटले दुस्तर
नामकर्म ते जेना उदयथी कागनादिकनी पेठे कानने
कटुक लागे एवा स्वरनी प्राप्ति थाय ठे ते ९ अणा
इक्क एटले अनादेय नामकर्म ते जेना उदयथी लो
कने विषे तेनु बोलवु कोइ मान्य करे नहीं ते १० अज
स एटले अयश नामकर्म ते जेना उदयथी लोकमां
अपकीर्ति थाय, पण कोइ यश बोले नहीं ते ॥

एवी रीते आ कहु जे थावरदसंगं एटले स्थावर
दशके, ते पुण्यतेत्त्वसां कहेला त्त दशकृथी विव्रज्जठे
एटले विपरीतार्थ जाणी लेवुं ॥ २० ॥

॥ इति पापतत्त्वविचार समाप्तः ॥

गाथा २१ मीना बूटा शब्दना अर्थ

इदिय=इडिय	कमा=अनुक्रमे
कसाय=कषाय	किरिआओ=क्रियाओ.
अवय=अप्रत.	पणवीस=पचीस
जोगा=योग	इमाउ=आ; ए
पंच=पांच.	ताओ=ते
चउ=चार	अणुकमसो=अनुक्रमे.
तिन्नि=त्रण	

इदिअ कसाय अवय, जोगा पंच चउ पंच
तिन्नि कमा, किरिआउ पणवीसं, इमाउ ताउ
अणुकमसो ॥ २१ ॥

शब्दार्थ.-इडिय, कषाय, अप्रत अने जोग, ते अनुक्रमे पाच,
चार, पाच, अने त्रण ठे अने क्रियाओ पचीस ठे ए सबै
मलीने आश्रवना वेंतालीश जेद यया. वली क्रियाओ अनुक्रमे
आ ह्ये पठी कहेयागे ते जाणवी

विस्तारार्थः—जेम जे मार्गे करी तलावमा पीणो थावे ठे, तेने नाखु कहिये, तेम जेणे करी आत्माने विपे कर्मानु थाववु थाय ठे तेने आश्रव कहीए, ते श्रोत्र, चक्षु, नासिका, जिह्वा तथा स्पर्शन, ए पच एटले पाच इन्द्रिय एटले इन्द्रियो ठे क्रोध, मान, माया, ने लोभ ए चउ एटले चार कसाय एटले कपाय ठे प्राणातिपात, मृपावाद, श्रद्धादान, मैथुन, अने परिग्रह, ए पच एटले पाच श्रव्य एटले श्रवत ठे. मनोयोग, वचनयोग, तथा काययोग, ए तिन्नि एटले त्रण जोगा एटले योग ठे, ए कमा एटले अनुक्रमे सत्तर जेद थया अने किरिआउ पणवीस एटले पच्चीश पाप क्रियाउ ताउ एटले ते, श्माउ-आ एम वधा मळीने अणुक-मसो अनुक्रमे आश्रव त्तरना वेंतालीस जेद थया.

ह्वे आश्रव वे प्रकारना ठे ते एक इव्याश्रव अने बीजो ज्ञावाश्रव जीवना जे शुजाशुज परिणाम ते ज्ञावाश्रव कहीए एटले इन्द्रियना उपयोग रूप परिणाम तेमज कपाय, श्रवत तथा क्रियारूप परिणाम ते सर्व ज्ञावाश्रव जाणवो तथा योग ते मन वचन

अने कार्याना आधाररूत कर्म लेवानुं कारण एवुं जे
 आत्मप्रदेशनुं कंपनपणुं तेने जावाश्रव कर्हीये तेमज
 ए जावाश्रवनां निमित्तं पामीने तेणे करी जीवने अ-
 ष्टविध कर्मनो आश्रव थायठे तेने ड्रव्याश्रव कर्हीए

गाथा ११ मीनां वृटा शब्दना अर्थ

काश्च=कार्यिकी
 अहिगणीया=अधिकरणीकी
 पाउसिया=प्राद्वेषिकी.
 पारितावणी=पारितापनीकी.
 किरिया=क्रिया-(ए शब्द वधा
 ने लगाडवो)

पाणाश्वाय=प्राणातिपातीकी
 आरजिअ=आरजिकी.
 परिगहीआ=परिग्रहिकी.
 मायवत्तिअ=माया प्रत्ययिकी.

काश्च अहिगणीया, पाउसिया पारि
 तावणी किरिया ॥ पाणाश्वायां रंजिय, परि
 गहिया मायवत्तिअ ॥ ११ ॥

शब्दार्थ-कार्यिकी, अधिकरणीकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनीकी,
 प्राणातिपातीकी, आरजिकी, परिग्रहिकी, अने मायाप्रत्ययिकी.

विस्तारार्थ-पहेली काश्च एटले कार्यिकी क्रिया ते
 कायाने अजयणाए प्रवर्त्तावतां जे क्रिया लागे ते.

(६४)

बीजी अहिगरणीया एटले अधिकरणिकी क्रिया ते
खरुगादिक अधिकरणे करी जे, जीवोनु हनन थाय
ते. त्रीजी पाउसिथ्या एटले प्रद्वेषिकी क्रिया ते जीव
तथा अजीव उपर द्वेषनी चिंतवना करवी चौथी
पारितावणी एटले पारितापनिकी क्रिया ते पोताने
तथा परने परिताप जे उपजाववो ते पाचमी पाणाड-
वाइ एटले प्राणातिपातिकी क्रिया ते एकेंद्रियादिक
जीवने हणवो तथा जे हणाववो ते ठछी आरज्जिअ
एटले आरज्जिकी क्रिया ते खेती प्रमुखनी जे उत्पत्ति
करवी अथवा कराववी ते सातमी परिग्गहिया ए-
टले परिग्रहिकी क्रिया ते धन धान्यादिक नवविध
परिग्रह मेलप्रता तथा तेनी उपर मोह करता जे क्रि-
या लागे ते आठमी मायवत्तीअ एटले माया प्रत्य-
यिकी क्रिया ते मायाए करी बीजाने ठगवु ते मूलमां
जे किरिअ्या एटले क्रिया शब्द ठे ते उक्त प्रकारे
सर्व शब्दोने जोरवो २२

गाथा २३ मीना वृटा शब्दना अर्थ.

मिच्छादसणवत्ति=मिथ्यादर्शन
प्रत्ययिकी.

अपञ्चस्काणीअ=अप्रत्याख्या-
नीकी

दिठि=दृष्टिकी.

शुठिअ=सृष्टिकी.

पाडुच्चिअ=मातित्यकी.

सामतोवणीअ=सामतोपनीपा-
तिकी.

नेसठिय=नैमृष्टिकी.

साहठिय=स्वदस्तिकी

मिच्छादंसणवत्ती, अपञ्चस्काणीय दिठि
पुठिअ ॥ पाडुच्चिअ सामंतो-वणीअ नेसठि
साहठो ॥ २३ ॥

शब्दार्थः—मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी, अप्रत्याख्यानिकी, दृष्टिकी,
सृष्टिकी, मातित्यकी, सामतोपनिपातिकी, नैमृष्टिकी, अने
स्वदस्तिकी

विस्तारार्थ —नवमो मिच्छादसणवत्ती एटले मिथ्यादर्श
न प्रत्ययिकी क्रिया ते जिनवचन अणसद्वहतो थको जे
विपरीत प्ररूपणा करतां क्रिया लागे ते दसमी अप्पञ्च
स्काणीय एटले अप्रत्याख्यानिकी क्रिया ते अविरतिये
करी पञ्चस्काण कर्या विना जे सर्व वस्तुनी क्रिया लागे

(६६)

ते अग्यारमी दिष्टि एटले दृष्टिकी क्रिया ते कौतुकेकरी
अश्व प्रमुखने जोबु ते वारमी पुठीअ एटले स्पृष्टिकी
अथवा पृष्ठिकी क्रिया ते रागने वशे करीने जे पुरुष,
स्त्री, गाय, वलद, वस्त्र प्रमुख सुकुमार वस्तुने स्पर्श
करवु तेथी जे क्रिया लागे ते अथवा कोई सदेह उ-
त्पन्न थयाथी पूठवु तेथी जे क्रिया लागे ते तेरमी
पाकुच्चिअ एटले प्रातित्यकी क्रिया ते जीव तथा अ-
जीव आश्रयी जे राग छेप थायठे, एटले बीजाने
घेर हस्ती, घोना, वस्त्र, नूपण प्रमुख देखी छेप धरे
जे ए वस्तु एनी पासे केम ? एबु चितवी कर्मवध
करे ते चौदमी सामतोवणीअ एटले सामतोपनिपा-
तिकी क्रिया ते पोताना अश्व प्रमुखने जोबा माटेआ-
वेला लोकोने प्रशसा करता जोईने हर्ष करवो, अथवा
दव, दही, घी, तेल, प्रमुखनु जाजन उघारु मूझ्या
थो तेमा जे त्रस जीव आवी पने ते पदरमी नैसष्ठि
एटले नैसृष्टिकी क्रिया ते राजादिकोना आदेश थकी
यत्र शस्त्रादिकनु जे आकर्षण करवुं, अथवा शस्त्र, घना
वबु, वाव्य, कूवानु खनन कराववुं ते सोदमी साह

द्वि एटले स्वहस्तिकी क्रिया ते पोताने हाथे अथवा
 श्वानादिक जीवथी तथा शस्त्रादिक अजीवथी जे शश-
 कादिक जीवने मारवु अथवा कोइ पुरुष अत्यत अन्नि
 मान करीने क्रोधित चित्तवत थको जे काम पोताना
 नोकरो करी शके ते काम पोताना हाथथी करे ते ॥२३॥

गाथा २४ मीना वृटा शब्दना अर्थ

आणवणि=प्राज्ञापनिकी-आ
 नयनिका

विआरणिआ=विदारणिकी

अणजोगा=अनाजोगिकी

अणवकख पञ्चइआ=अनवका-
 हा मत्ययिकी

अना=ए मिवाय बीजी.

पअोग=मयोगिकी

पिज्जा=मेमिकी.

दोस=द्वेषिकी

इरिया वहिया=इर्यापधिकी.

समुदाण=समुदानकी.

आणवणि विआरणिआ, अणजोगा
 अणवकख पञ्चइआ ॥ अना पअोग समुदा
 ण पिज्जादोसेरिआ वहिआ ॥ २४ ॥

शब्दार्थ-—प्राज्ञापनिकी, विदारणिकी, अनाजोगिकी, अनवकाहा
 मत्ययिकी, ए विना बीजी ते प्रायोगिकी, समुदानकी, मेमि
 की. द्वेषिकी, अने इर्यापधिकी.

(६७)

विस्तारार्थ —सत्तरमी आणवणि एटले आझापनिकी क्रिया ते जे जीव तथा अजीवने काइ आझा करवी अथवा तेउनी मारफते काइ अणाववु ते. अठारमी विचारणिआ एटले विदारणका क्रिया ते जीव तथा अजीवनु जे विदारण करवु जागवु ते उंगणीशमी. अणजोगा, एटले अनाजोगिकी क्रिया ते उपयोग विना गून्य चित्ते करी काइ वस्तु लेवी, अथवा मूकवी, तथा उठवुं, वेसवु गमनादिक करवु ते वीसमी अणवकखपच्चइया एटले अनवकाक्षाप्रत्ययिकी क्रिया ते आलोक तथा परलोकथी जे विरुद्ध कार्यनु आचरण करवु ते हवे अज्ञा एटले पूवे वीश कही तेथी वीजी मन, वचन, तथा कायाना योगनु जे डु प्रणिधान तेमा प्रवर्त्तन करवु, पण निवृत्तवु नहोँ ते एकवीसमी पठंग एटले प्रायोगिकी क्रिया वावीसमी समुदाण एटले समुदानकी क्रिया ते एवु मोडु पाप करे, जे थकी आठे कर्मनु समुदायपणे ग्रहण थइ जाय ते त्रेवीसमी पिऊ एटले प्रेमिकी क्रिया ते माया तथा लोभवने जे काइ करवु, एटले प्रेमनां

(६९)

वचन एवं बोले, के जे थकी रागनी अधिक वृद्धि
थाय ते चौबीसमी दोस एटले द्वेषिकी क्रिया ते
क्रोध तथा मानवने एवं गर्वित वचन बोले, के जे
थकी आगलाने द्वेष उपजे ते पच्चीसमी इरियावहि-
या एटले इर्यापथिकी क्रिया ते केवल काययोगनुं जे
प्रवर्त्तावबुं तेणे करी जे क्रिया लागे ते इरियापथि-
की क्रिया अप्रमत्त साधुने तथा केवलीने पण होय
एटले केवलीने केवल काय योगथी उपजे ठे, तथा
समिति प्रमुख साचवतां पण साधुने दोषनुं पन्नि-
म्बुं ते पण इर्यापथिकी क्रिया ॥ २४ ॥

ए पच्चीस क्रियानुं स्वरूप कहे ठे

- १ कायिकी क्रिया एटले कायाये करी जे थाय ते.
- २ अधिकरणकी क्रिया एटले जीव पोताना आ
त्माने नरकादिकमा जवाने वास्ते अधिकारी करे ते.
- ३ प्रदोष क्रिया एटले जेमा प्रकपेँ अगिरु दोष ए-
टले द्वेष होय ते
- ४ पारितापनिकी क्रिया ते जीवने परिताप आप-
चाथी उत्पन्न थाय जे क्रिया ते.

५ प्राणातिपातिकी क्रिया एटले प्राणीउने विनाश करवानी क्रिया

६ आरंजिकी क्रिया एटले पृथिव्यादिक ठ कायने उपघात करवानुं जे क्रियामा लक्षण होय ते

७ परिग्रहिकी क्रिया एटले विविध उपाये करी धन उपार्जन करवामा तथा धन रक्षण करवामा जे मूर्च्छाना परिणाम तेथी उत्पन्न थयेली जे क्रिया ते

८ माया प्रत्ययिकी क्रिया एटले माया ठे प्रत्यय एटले हेतु जेनी, एटले मायानी जिहा प्रधान प्रवृत्ति ठे ते

९ मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया एटले मिथ्यात्व ज ठे प्रत्यय एटले कारण जेनु ते

१० अप्रत्यारयानिकी क्रिया एटले रुचमना विघात कारक जे कपाय,तेना उदयथी प्रत्यारयाननु नकरवुते-

११ दृष्टिकी क्रिया ते रागादि क्लुषित चित्ते करी जे जीव, अजीवनु देखवुं ते

१२ स्पृष्टिकी क्रिया एटले राग द्वेष अने मोह स

युक्त चित्ते करीने जे स्त्री आदिकना शरीरनो स्पर्श करवो ते

१३ प्रातित्य प्रत्ययिकी क्रिया एटले पूर्वे अंगीकार करेलां पापना उपादान कारणरूप जे अधिकरण, तेनी अपेक्षाये जे क्रिया उत्पन्न थाय ते

१४ सामतोपनिपातिकी क्रिया एटले (समतात् के०) सर्व दिशाउर्थी (उपनिपात के) आवबु एटले जे स्थानमां जोजनादिकने लीधे सर्व दिशाउर्थी स्त्री आदिक जीवोनु आवबु थाय ते

१५ नैसृष्टिकी क्रिया एटले जे परोपदेशित पाप मां घणो काल प्रवर्त्ते, ते पापनी ज्ञावथी अनुमोदना करे ते

१६ पोताना हाथथी जे करे ते स्वहस्तिकी क्रिया

१७ आज्ञापनिकी क्रिया एटले श्री अर्हंत जगवाननी आज्ञा उल्लघन करी पोतानी बुद्धिथी जीवाजीवादि पदार्थोनों प्ररूपणाद्वारा जे क्रिया ते

१८ वैदारणिकी क्रिया ते बीजाना अठता माठा आचरणने प्रकाश करी तेनी पूजानो नाश करवो

तेथी उत्पन्न थएली जे क्रिया ते

१९ अनाज्ञोगिकी क्रिया एटले (आज्ञोग के०)
उपयोग ते थकी जे विपरीत होय, तेने अनाज्ञोग क
हिये, तेणे करी उपलक्षित जे क्रिया ते

२० अनवकाहा प्रत्ययिकी क्रिया एटले पोतानी
तथा पारकी जे अपेक्षा करवी, तेनु नाम अवकाहा
ठे, ते थकी जे विपरीत होय, तेने अनवकाहा कहीये
तेज ठे प्रत्यय एटले कारण जेनुं एटले परमेश्वरे क
हेली जे करवा योग्य विधियो, ते विधियो माहेली
कोइ कोइ पण विधियो पोताने अथवा कोइ परजी
वने हितकारी ठे, ते विधियोमा प्रमादना वशथकी
अनादर करवो ते

२१ प्रयोगिकी क्रिया एटले प्रयोग ते एकतो दोम्बु,
चालबुं, इत्यादि कायानो व्यापार, बीजु हिंसाकारी
कठोर जुठादिक बोलबु, ते वचननो व्यापार, त्रीजो
पराजिओह इर्ष्या अजिमानादिक मननो व्यापार, ए
अणनु जे करबु ते.

२२ समुदान क्रिया एटले जेणे करी विषय ग्रहण

करीये, ते समादान इन्द्रिय ठे, तेनो जे देशथी अथ-
वा सर्वथी उपघातरूप व्यापार ते

१३ प्रेम एटले माया अने लोभ तेणे करी जे थाय,
ते प्रेम प्रत्ययीकी क्रिया

१४ द्वेष एटले क्रोध, अने मान, तेणे करी जे थाय
ते द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया

१५ चालत्राथी जे क्रिया थाय ते ईर्यापथिकी क्रि-
या ए क्रियाउं माहेली केटलीएक क्रियाउं आपसमां
सरखी देखाय ठे, तोपण सरखी समजवी नही.

ए पच्चीस क्रियाउं कही, ते पूर्वे कहेला सत्तरजेदो
साथे मेलवता आश्रवतस्वना वेंतालीस जेद थाय.

॥ इति आश्रवतस्व समाप्तम् ॥

गाथा १५ सीना बूटा शब्दना अर्थ.

समिद्ध=समिति.

गुत्ति=गुप्ति

परीमह=परिसह.

जइयम्मो=पतिथर्म

जावणा=जावना.

चरित्ताणि=चारित्र

पण=पाच

ति=त्रण

इविस=वावीस

दस=दस.

(७४)

वार=चार
पच=पाच

जेएहिं=जेदोए करीने
सगवणा=सत्तावन

समिई गुत्ति परीसह, जइधम्मो ज्ञावणा
चरित्ताणि ॥ पण ति ड्वीस दस वार, स
पचजेएहिं सगवणा ॥ १५ ॥

शब्दार्थ-समिति, गुत्ति, परिसह, यतिधर्म, ज्ञावणा, अने चारित्र
ते अनुक्रमे पाच, त्रण, बावीस, दस, वार अने पाच एवा
जेदोए करीने सवरना सत्तावन जेदो ठे ॥ १५ ॥

विस्तारार्थ -जे वरु नवा कर्मों आवता रोकाय तेने सं-
वर कहे ठे, तेना वे जेद ठे एक ड्रव्य सवर अने वी-
जो ज्ञावसवर तेमा नवा कर्मोंनु जे रोकावबु तेने
ड्रव्य सवर कहिये, अने समिति प्रमुखपणे करी परि-
णामने पाम्थुं जे शुद्ध उपयोगरूप ड्रव्यपणु, तेथी ज्ञा
वकर्मना रोधक आत्माना परिणाम थाय ठे, तेने ज्ञा-
व सवर कहिये तिहा सम्यक् प्रकारे जे चेष्टा करवी,
तेने समिइ एटले समिति कहिये ते पण एटले पाच
ठे योगनु जे गोपन करबु, तेने गुत्ति एटले गुत्ति क-

हिये, ते ति एटले त्रण ठे, सर्व प्रकारे निर्जराने अर्थे
जे सहन करवु, तेने परीसह एटले परिसह कहिये, ते
डुवीस एटले वावीस ठे यतिने जे अविश्य आचरवा
योग्य होय, तेने जइधम्मो एटले यतिधर्म कहिये ते
दस एटले दस ठे मननी चंचलता निवारण करवाने
जे ज्ञावबुं, तेने ज्ञावणा एटले ज्ञावना कहिये ते वा-
रस एटले वार ठे कर्मक्षय थवाने अर्थे अहिंसादिक
परिणामे करी जे यत्नादिकनु आचरवु तेने चरित्ताणि
एटले चारित्र कहिये ते पच एटले पांच ठे एवी
रीते सगवन्ना एटले सत्तावन जेएहि एटले जेदे करी
संवरतत्त्व जाणवो ॥ २५ ॥

गाथा २६ मीना वृटा शब्दना अर्थ

इरिया=इर्यासमिति

जास=जापासमिति

एसणा=एसणासमिति.

आदाणे=आदान निक्षेपणा
समिति

उचारे=पारिष्ठापनिका समिति.

समिइ=समिति.

मु=मूली

अ=अने-वली

माणुत्ति=मनगुत्ति

वयगुत्ति=वदनगुत्ति

कायगुत्ति=कायगुत्ति

तहेवय=तेमज.

इरिया ज्ञासेसणादाणे, उच्चारे ममिईसु अ
मणगुत्ति वयगुत्ति, कायगुत्ति तद्देव य ॥२६॥

शब्दार्थ - इर्यासमिति, ज्ञापासमिति, एपणासमिति, आदाननिक्षे-
पणाममिति, उच्चारसमिति ए पाच समिति वली मनगुत्ति, वच-
नगुत्ति तेम न कायगुत्ति, ए व्रण गुत्ति जाणवी

विस्तारार्थ.-गाथाना पूर्वार्थे करी पाच समितिनु वण्णंन
करे ठे समिति एटले सम्यग् चेट्टा तेमा,

१ पहेली इरिया एटले इर्यासमिति ते जयणा राखी
उपयोग सहित धूसरा प्रमाण जूमिका दृष्टिए जो
इने जे चालमानो चेट्टा करवी ते

२ दोजी ज्ञास एटले ज्ञापासमिति ते सम्यक् प्र
कारे निरवद्य ज्ञापा वोलगारूप जे चेट्टा करवी ते

३ त्रीजी एसणा एटले एपणासमिति ते सम्यक्
प्रकारे वेतालीस दोष रहित निर्दोष आहार, वस्त्र,
पात्र, वसति, सवधी जे जिज्ञानी गवेपणा करवी,
तेनी जे चेट्टा ते

४ चोथी आदाणे एटले आदाननिक्षेपण समिति
ते सम्यक् प्रकारे पुजी, प्रमार्जी, आसन प्रमुखनुं

आदान एटले ग्रहण करवानी जे चेष्टा करवी, तथा तेने निक्षेप एटले त्याग करवानी जे चेष्टा करवी ते. आ ठेकाणे मूलमा आदान शब्द ठे ते कहेवाथी निक्षेपण शब्द पण साथे लेवो. जेम ज्ञीम शब्द कहेवाथी ज्ञीमसेन समजाय ठे तेम अहीया पण जाणीलेखुं

५ पांचमी (उच्चारें के०) उच्चार एटले मलमूत्रादिक तेने परठववु माटे पारिष्ठापनिका समिति, ते परठवा योग्य जे मलमूत्रादिक वस्तु, तेनु स्थगिल जूमिकाने विषे उपयोग पूर्वक जे मूकवानी चेष्टा करवी, तथा सदोष उपकरणादिकने परठववानी चेष्टा करवी ते. एवी रीते ए पांच समिश् एटले समिति ते सु एटले ज्ञली परिवृत लक्षण जाणवी, अ एटले हवे गाथाना उत्तरार्धवनेत्रणगुप्तिनुवर्णनकरेठे. प्रथम (मणगुप्तिके०) मनगुप्तिएटले मननुं गोपन करवु, तेना त्रण जेद ठे — तेमां अपध्याने करी उत्पन थएली कल्पना जालनो जे वियोग, ते पहेलो जेद अर्धध्याने करी मध्यस्थ पणानी जे परिणति, ते बीजो जेद. अने सर्वथा स-

नोयोग रोकायाथी तेरमा गुणगणाना अतने विपे जे
 आत्मारामता थाय ठे, ते वीजो जेद जाणवो. वीजो
 (वयगुत्ति के०) वचनगुत्ति एटले वचननु गोपन करवुं
 तेना वे जेद ठे - सर्वथा वचननो रोध करवाने अर्थे
 मौननो अग्निग्रह धारण करीने हाथ प्रमुखनी सज्ञा
 वरुं कार्य करवुंते पहेलो जेद अने मौननो अग्निग्र-
 ह धारण नहीं कर्यो ठता याचना प्रमुख कार्य करती
 बेलाए मुखे मुहपत्ति देइने जे जयणायी बोलवुं, ते
 वीजो जेद जाणवो, इहा ज्ञापा समितिमा तो केवल
 जयणाये बोलवानुज कहुं ठे, अने एमा तो एक स
 र्वथा वचननो रोध करवो अने वीजु जयणाये बोलवुं,
 ए जुदा जुदा वे स्वरूप देखाड्या ठे ए उपरथी वच
 नगुत्ति अने ज्ञापासमिति एठमा ए अतर ठे, एम
 जाणवुं अने तहेव एटले तेमज वीजी[कायगुत्ति के०]
 कायगुत्ति एटले कायानु गोपन करवुं तेना पण वे
 जेद ठे - उपसर्ग परिसह आवी उत्पन्न थवाथी पण
 जे काया स्थिर राखवी, अथवा चौदमे गुणगणणे योग
 निरोधावस्थाये सर्वथा शरीरनीचेष्टानो त्याग करवो,

ते पहेलो जेद, अने शयन, आसन प्रमुखने विषे सू-
त्रोक्त विधिये करी चेष्टानो नियम करवो एटले माथा
तले हाथ घाली, गूठण संकोची, कूकमीनी पेठे पग
यसारीने सूधुं ते बीजो जेद जाणवो ए समिति
अने गुप्तिना अर्थमा आटधु विशेष ठे, के सम्यक् प्र-
कारे चेष्टारूप जे प्रवृत्ति करवी, ए समितिनु लक्षण
ठे. अने शुभस्थानने विषे प्रवृत्ति करवी, तथा अशुभ
स्थानथी निवर्त्तधु, एम प्रवृत्ति तथा निवृत्तिरूप गुप्ति
नु लक्षण ठे ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति मली
आठ प्रवचन माता कहेवाय ठे ते चारित्ररूप शरीर
ने उपजाववा तथा तेनु पालण पोषण करवा माटे
माता समान ठे ॥ २६ ॥

गाथा २७ मीना वृटा शब्दना अर्थ

खुदा=क्षुधापरिसह; भुख
पिवासा=पिपासा, तरस
सी=शीत-टाढ
उण्ह=उष्ण, ताप
दसा=दश.

अचेल=अचेलक, वस्त्ररहितपणुं
अरइ=अरति, पीडा.
इच्छिययो=च्छी.
चरिआ=चर्या, चालवुं
निसिहिया=नैपेधिकी

सिद्धा=शय्या
अक्रोश=आक्रोश

वह=वध
जायणा=याचना

खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेला रई
त्रिचं ॥ चरिआ निसिहिया सिज्जा, अक्रोस
वह जायणा. ॥ ९७ ॥

शब्दार्थ - क्रुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, दस, अचेल, अरति, स्त्री,
चर्या, निपद्या, शय्या, आक्रोश, वध अने याचना (परिसह)-
विस्तारार्थ - हवे परिसह शब्दनो अर्थ कहे ठे, जे जै-
न मार्गने नहि मुकवाने अर्थे तथा कर्मनी निर्जरा
करवाने अर्थे दु खोने परि एटले समस्त प्रकारे सह
एटले सहन करवु परे तेने परिसह कहीये, व्याकर-
णमा लरयु ठे के, " परिसहतीति परिसह ' ते प-
रिसह सर्व मली वावीस ठे, तेमा दर्शन परिसह
अने प्रज्ञा परिसह जैनमार्ग न मुकवाने अर्थे ठे,
अने वाकी वीस परिसह कर्म निर्जरा करवाने अर्थे
ठे ए वावीस परिसहोना अर्थ सहित नाम तथा अ-
नुक्रम ते परिसहोने कहेवाना कारण कहे ठे

१ खुहा एटले क्रुधा परिसह ठे क्रुधा एटले जूख

अने तेथी उत्पन्न थनारी वेदना सर्व वेदनाउथी अधिक ठे, कारण के जूख आंतरमां अने पेटने वालनारी ठे, हवे साधु मुनिराजने गमे तेथी जूख लागे, तोपण तेउ अनेपणीय आहार ले नहिं, अने आर्त्त ध्यान पण करे नहिं परंतु रूमे परिणामे जुख सहन करे आ दुधा सहन करनी घणीज दुर्लज ठे माटे सर्व परिसहोमां ए दुधा परिसह पहेलो गण्यो ठे.

२ पिवासा एटले पिपासा परिसह ठे ते पहेलां कहेली दुधानी पीना मटानवा सारु उचा नीचा घरोने त्रिपे विहार करवो पके तेना श्रमे करीने तरस उत्पन्न थाय, माटे दुधा पठी बीजो पिपासा परिसह गण्यो ठे अहिं साधु प्रासुक एपणीय जखने अजावे तरसथी आकुज व्याकुल थएलो ठतो पण अनेपणीय शीतल जलादिकनी इष्टा करे नहिं परंतु सम्यक् प्रकारे तृपा सहन करे.

३ सी एटले शीतपरिसह ते जूख अने तरसथी पीनाएलाने शीतपणु थाय माटे बीजो शीतपरि

(७२)

सह गण्यो ठे तिहा शीतकालने त्रिपे ज्यारे टाढ पमे त्यारे कढपनीय वस्त्रने अज्ञावे गृहादिके रहित एवो पण अकढपनीय वस्त्रनी इठा करे नहिं पोते अग्नि प्रदीप्त करी तापे नहिं, तेमज बीजाए सलगावेला अग्निथी पण तापे नहिं परतु अढपजीर्ण वस्त्रोए करी सारी रीते टाढने सहन करे

४ उएह एटले उष्ण परिसह, ते उष्ण ऋतु जे ठे, ते पूर्वोक्त शीत ऋतुनी विपकीञ्चूत ठे, माटे शीत पठी चोथो उष्ण परिसह गण्यो ठे तिहा उष्ण कालने त्रिपे रह्यो ठतो सूर्यनु प्रतिविम माथे आवे, एवा मध्याह्न समये अत्यंत आतापना थए थके पण ठत्रनी अथवा लुगनानी ठायाने तथा विंजणा प्रमुखना वायुने अण वाठतो थको तेमज स्नान विलेपनादिकने नहिं करतो रुमे प्रकारे आतापना सहन करे

५ रुसा एटले रुसपरिसह, ते पूर्वोक्त उष्णकाल पठी वर्षाकाल आवे, ते वखते रुस मठरादिक बहु थाय, माटे उष्ण पठी पांचमो रुस परिसह गण्यो

ठे तिहां मशादि जू, मांकरु इत्यादिक हुद्र जीवो जेम संग्राममां शत्रु वाणनो प्रहार करे तेम मंख सारे, तोपण तेजना उपद्रवथी ते स्थानक तजीने । अन्य स्थानके जाय नहि, अथवा तेने निवारवा सारु। पखो करवानी इछा पण करे नहीं, तथा ते मंसादिक जीवो पोतानुं लोही पीये, तोपण तेना उपर छेप करे नहीं, एवी रीते सम्यक् प्रकारे मंश परिसह सहन करे.

६ अचेल एटले अचेलक परिसह, ते पूर्वोक्त मशादिके पराजत्र पाम्यो थको पण वस्त्रने वाठे नहीं, तेथी अचेलक परिसहने ठठो गण्योठे अचेलक एटले शुं? तो के चेल एटले वस्त्र तेनो अ एटले अज्ञाव ते अचेलक जाणवो अर्हीयां सर्वथा वस्त्रो नो अज्ञाव होय तेनुंज नाम अचेल परिसह नथी, परतु आगममां जे, जे वस्त्रो राखवानु प्रमाण कह्युं ठे, ते प्रमाणें राखे तो तेने अचेलक परिसह कहेवो हवे त्यां शका करे ठे, के जो कांइ पण वस्त्र राखे तोपण ते परिग्रहज कहेवाय ? त्यां कहे ठे, के जो मूर्छा सहित वस्त्र राखे

तो परिग्रह कहेवाय, परंतु मूर्खा रहित अपरिग्रहपणाये शास्त्रोक्त रीते राखे. तो अचेलक जाणवो तिहां साधुने फाटेलु अल्प मूढ्यनुं अने जूनु वस्त्र ठतां कल्पनीय वस्त्र न मले तथापि मनमा दीनता न करे, वली एम पण न विचारे के आज काल कोइ नवा वस्त्रनो आपनार पण मलतो नथी, माटे हवे केम करवु? अथवा आ वस्त्रो तो सभेला अने जूनां ठे, माटे वोजा नवा पहे, एवो विचार पण न करे ए प्रमाणे सम्यक् रीते अचेलक परिसह सहन करे.

७ अरइ एटले अरति परिसह ते पूर्वोक्त अचेलक अप्रतिवद्ध विहारी ठता तेने शीतादिकना सज्जवे करी अरति उपजे, माटे अचेटाक पठी सातमो अरति परिसह गण्यो ठे, तिहा जे रमण करवु ते रति अने तेथी विपरीत जे अरमणिकता ते अरति जाणवी. आ ठेकाणे साधुने समयमा विहार करतां अरति उपजवाना कारण वने, त्यारे धर्मने विषे रक्त थाय; क्षात्यादिक दस प्रकारना यति धर्मने ध्यावे, श्री दश-

वैकालिकनी प्रथम चूलिकामां अठार वस्तुनुं चितवन
करवाथी अरति दूर थाय ठे, ते प्रमाणे चितवन
करी अरति दूर करे

७ इच्छित एटले स्त्रीपरिसह. ते पूर्वोक्त समयने
विषे अरति उत्पन्न थवाथी स्त्री निमत्री तेनी अग्नि-
खापा करे, माटे अरति पठी आठमो स्त्रीपरिसह ग-
ण्यो ठे तिहां स्त्रीयोने दीठा थका तेनां अग, प्रत्यग,
सस्थान सुरति, हसवुं, मनोहरपणु ललित ।वद्वम-
विलासादिक चेष्टाउने अणचितवतो थको रहे, स्त्री-
योने मोक्ष मार्गमां अर्गला समान जाणी, तेने
कामबुद्धिये करी दृष्टि साथे दृष्टि मेलवी जुवे नही,
ते स्त्री परिसह

ए चरित्रा एटले चर्या परिसह चर्या एटले चा-
लवानु नाम ठे तिहा एक स्थले रहेतां भद सत्त्वने
पूर्वोक्त स्त्री उपर अनुराग थाय, ते माटे एक स्थानके
न रहे, तेथी ए स्त्री परिसह पठी नवमो चर्या परि-
सह गण्यो ठे तिहां आलस रहित थकां ग्राम, नगर

(७६)

कुलादिकने विषे विहार करवो, तेने इव्यथी चर्या कहीये अने जो एक स्थानके मास कल्पादिके रहेता पण अप्रतिबद्ध ममत्व रहितपणु अगीकार करवुं ते जागथी चर्या कहीये

१० निसिंहिया एटले नैपेधिकी परिसह ते पूर्वोक्त आमादिकने विषे जेम अप्रतिबद्ध विहार करवो, तेम देहादिकने विषे पण अप्रतिबद्ध स्वाध्यायने अर्थे नैपेधिकी करवी, ते माटे चर्या पठी दसमो नैपेधिकी परिसह गण्यो ठे जे निपेधिये तेने नैपेधिकी कहीये तिहा एक पापकर्म, वीजु गमनागमन, तेहीज निपेध करवानु ठे प्रयोजन जेनु तने नैपेधिक कहीये अहियां शून्य घर श्मशानादिक सर्प विल सिंह गुफादिकने विषे कायोत्सर्गे रखा थका तिहा नाना प्रकारना उपसर्गना सज्जाये पण अशिष्ट चेष्टानो निपेध करवो, अर्थात् माठी चेष्टा न करवी, तेने नैपेधिकी परिसह कहीये अथवा कोइ ठेकाणे निपद्या परिसह पण कह्यो ठे, ते निपद्या एवु रहेवाना स्था-

नकनुं नाम ठे, त्यां स्त्री, पशु पंरुक वर्जित स्थान-
मां रहेतां थकां जो इष्टानिष्ट उपसर्ग थाय, तोपण
पोताना चित्तमां चलायमान न थाय, परंतु ते सर्व
उपसर्गने उद्देग रहितपणे सम्यक् रीते सहन करे
ते नैपेविकी अथवा निपद्या परिसह

११ सिक्का एटले शय्या परिसह ते पूर्वोक्त नैपधि-
कीये स्वाध्याय करी, शय्याये आवे, माटे, अगीयार-
मो शय्या परिसह गण्यो ठे जेने विषे शयन करी-
ये तेने शय्या कहीये, तिहां शय्या ते वसति, उपा-
श्रये उचो नीची झूमि होय, अथवा कठिन आसन
पामीने तेने सारु अथवा मातु कहे नही, उद्देग करे
नही, परंतु रुने प्रकारे ते डु खने सहन करे, ते
शय्या परिसह

१२ अक्रोश एटले आक्रोश परिसह ते पूर्वोक्त श-
य्याये रहेलाने शय्यातर एटले शय्याना आपनार अ-
थवा वीजो आक्रोश करे, माटे शय्या पठी वारमो
आक्रोश परिसह गण्यो ठे ते एवी रीते के, क्रोधने

वश थएलो कोइ अज्ञानी पुरुष कोइ यतिने तिरस्कारना वचन बोले, तेने देखी तेनी उपर दृढ प्रहारीनी पेरे कोप करे नहि, परतु एवुं विचारे के आ पुरुष, खराने वास्ते मने अनिष्ट वचन कहेठे, ए महारो उपकारी ठे कारण के मने ते आ प्रमाणे शिखामण आपे ठे, तेथी हुं एवु काम फरीथी करीश नहीं अथवा ते पुरुष जे कहे ठे ते हु करतो नथी, तथापि महारे एनी उपर कोप करवो ते युक्त नथी, एम चिंतवी क्रोध न करे एम सम्यक् रीते आक्रोश सहन करे.

१३ वह एटले वध परिसह ते पूर्वोक्त आक्रोशनो करनार जे होय, ते वध पण करे, माटे आक्रोश पठी तेरमो वधपरिसह गणयो ठे, तिहा कोइ दुरात्मा आची ने साधुने डोंका, पाटु, चावक, कशादिकना आकरा प्रहार करे, अथवा वध करे, तोपण खधकसूरिना शिष्योनी पेठे तेना उपर विलकुल रोष आणे नहि, परतु अक्रुपित चित्तवत थको एवी चित्तवना करे, के ए महारु शरीरतो पुज्जरूप ठे, एतो अवश्य नाशवत ठे,

अने मारो आत्मा तो ए थकी जुदोज ठे, कारण के आत्मानो तो कोइ नाश करी शकेज नहि तो आ शरीरना संवधथी मने जे दुःख थाय ठे, तेतो मारां करेलां कर्म उदय आव्यां ठे, तेनु ए फल ठे एवी रीते वध परिसहने सहन करे

१४ जायणा एटले याचना परिसह. ते पूर्वोक्त उपरथी ह्णणाने औपधादिकनी याचना करवानुं प्रयोजन थाय, माटे वध पठी चौदसो याचना परिसह गण्यो ठे जे बीजा पासेथो याचीये तेने याचना कहीये ते आ प्रमाणे.-

यतिये वस्त्र, पात्र, अन्न, पान, उपाश्रय, प्रमुख कोइ पण चोज अर्थात् एक शक्ती जेटली चीज पण माग्या त्रिना लेवी नहि तो पण पोतानी शोभा राखवाने अर्थे मागे नहि, तथापि पोतानु प्रयोजन होय त्वारे लज्जा ठांणीने याचना करे परंतु रांधेला धान्यने अर्थे जला माणसने घेर जड याचना करवी एवुं चितवे नहि. ते करतां तो गृहस्थावासमां रूहेवुं

ज जलु, के ज्यां आपणा जुज दमना पराक्रमथी
 उपजाव्यु जे अन्न, ते दीनहीनादिकने आपी, पठी
 जमीये, एवी विचारणा करीने गृहस्थपणाने इठे
 नहिं, अथवा याचना करतां कोइ आपशे किवा नहि
 आपशे ? तो हु आ गृहस्थने घेर जइ लाखनो मर्म
 गमावीने शी रीते याचना करुं ? इत्यादिक चितवना
 न करता याचना करे ॥ १७ ॥

गाथा १७ मीना वृटा शब्दना अर्थ

अलान्न=अलान्न

रोग=राग

तणफासा=तृणस्पर्श

मल=मल

सकार=सत्कार

परीसहा=परिसह (ए शब्द न-

धाने लगाम्बो)

पन्ना=पद्मा

अन्नाण=अन्नान

सम्मत्त=सम्यक्त्त

इअ=ए प्रकारे

वावीस=वावीस

परीमहा=परिसह

अलान्न रोग तणफासा, मल सकार परी-
 सहा ॥ पन्ना अन्नाण सम्मत्त, इअ वावीस
 परीसहा ॥ १७ ॥

शब्दार्थः—अलाज, रोग, तृणस्पर्श. मल, सत्कार, प्रज्ञा, अज्ञान,
अने सम्यक्त्व ए प्रकारे बाबीस परिसह जाणवा.

विस्तारार्थ—१५ अलाज एटले अलाज परिसह ते पूर्वोक्त
याचना कर्या ठतां पण लाजांतरायना उदयथी माग्यां
ठतां पण मले नहीं, माटे याचना पठी पदरमो अला-
ज परिसह गण्यो ठे ते आ प्रमाणेः—साधुने कोइ
पण चीजनी इछा होय अने ते वस्तु गृहस्थना घरमां
पण घणीज होय पण ज्यारे ते मागवा जाय ठतां
गृहस्थ आपे नहि त्यारे ढढण कुमारनी पेठे उद्वेग
करे नहीं, विषाद न करे मुखराग फेरवे नहीं, न
आपनारनु मावु चितवे नहि, दुर्वचन बोले नहीं अने
समता धारण करी विचार करे के आज नहि मद्युं
तो काले मलशे ज्यारे मलगे त्यारे लइशुं ए प्रमाणे
अलाज परिसह सहन करे

१६ रोग एटले रोग परिसह ते पूर्वोक्त अलाज
थकी आतप्रात जोजने करी रोगनी उत्पत्ति थाय,
माटे अलाज पठी सोलमो रोग परिसह गण्यो ठे.

तिहा साधुने ज्यारे कास, श्वास, ज्वर, अतिसारा-
दिक रोग उत्पन्न थाय, त्यारे जे गढवाहिर जिन-
कढपी साधु होय, ते तो चिकित्सा करवानी श्छा
पण करे नहीं, अने पोताना कर्मनो विपाक चिंतवे,
परंतु स्थविरकढपी गढवासी साधु तो आगममां
कहेला विधिये करी निरवद्य चिकित्सा करावे मनमां
कर्म विपाक चिंतवतो रहे, पण हायवोय करे नहीं,
जो अत्यंत वेदना थती होय, तो पण आर्त्तध्यान
करे नहि परंतु सनत्कुमारनी पेठे रुमी रीते वेदना
सहन करे

१७ तण फासा एटले तृणस्पर्श परिसह ते पुर्वो-
क्त रोगीने शय्यामा सूता थका तृणस्पर्श थाय, माटे
रोग परिसह पठी सत्तरमो तृणस्पर्श परिसह ग-
ण्यो ठे तिहा गढनिर्गत साधुने तृणनाज सथारो
कह्योठे, पण गढवासी साधुने तो सापेक्ष सयम
थाय ठे, माटे ते वस्त्र पण लेठे परंतु ज्यारे जमीन
जोनी होय अथवा वस्त्र जुनु थयु होय अथवा चोरे

चोरी लीधुं होय, त्यारे राजनो अढी हाथ प्रमाण
 संधारो करे पण तृणना अग्रजाग तीखा होय, ते
 शरीरने लागे, तेथी पीना उत्पन्न थाय तो पण
 दुःख चित्तवे नहि अने समाधिनो त्याग पण
 करे नहीं

१७ मल एटले मल परिसह, ते पुर्वे कहेला तृण
 स्पर्श करी परसेवाने सयोगे मल उपजे, माटे तृण
 पढी अढारमो मल परिसह गण्यो ठे अर्हियां परसे-
 वाना पाणी वने साधुना शरीरमां रजनो कठिण
 मेल बधाइ जाय, ते मेल उष्णकालनां ताप वने
 परसेवाथी जीजाइने दुर्गंधे गधाय, तो पण ते दुर्ग-
 धताने दूर करवा सारु स्नानादिकनी इत्ता करे
 नहीं वली ए थकी म्यारे हु मुक्त थइश एवी चित्त-
 वना पण करे नहीं

१९ सक्कार एटले सत्कार परिसह ते पुर्वोक्त मल
 व्याप्त पुरुष, कोइ पवित्र अगवादानो सत्कार थतो
 देखी कांडक पोते पण सत्कारादिकनी वांठा करे,

(९४)

माटे मल पठी उंगणीसमो सत्कार परिसह गण्यो
ठे ते आ प्रमाणे.-साधुने कोइए स्तवन, नमन, च-
रणस्पर्श, सन्मुख जवु, उचु थावु, आसन देवुं,
अशनादिकनु दान देवु, अथवा कोइ मोटा राजा
दिके निमंत्रणादिकनु करवुं, एवो सत्कार पोताने
यतो देखीने मनमा हर्ष आणे नहिं, अने सत्कार
न थवाथी मनमा खेद पण पामे नहीं

१० पन्ना एटले प्रज्ञा परिसह ते पूर्वोक्त सत्कारना
जयथी प्रज्ञाने वाहूद्वये गर्व न करवो तेमज प्रज्ञाने अ-
ज्ञावे खेद पण करे नहीं माटे सत्कार पठी वीसमो
प्रज्ञा परिसह गण्यो ठे, ते आ प्रमाणे -जेणे करी व-
स्तुनु तत्र (प्र) एटले प्रकर्षे करी (इ) एटले ज-
णाय, तेने प्रज्ञा कहिए, ते प्रज्ञावत साधु, घणा श्रुत-
नो जाण ठता में ज्ञवातरने विषे रुनी रीते ज्ञान आ-
राधन कर्युं ठे, माटे हु समस्त मनुष्योमा जाण तु,
सर्वेना पूठेला प्रश्नोना उत्तर हु थापुवु ? एवो गर्व न
करे, अने प्रज्ञाने अज्ञावे मनमा उद्वेग पण न करे, ते

(६५)

एमके, हु मूर्ख तुं, कांश् पण जाणतो नथी, - सर्वने पराजयनुं स्थानक तु, कोश्ए पूठयां थकां जीवादि पदार्थनां नाम पण जाणतो नथी, एवी दीनता मन-मा न करे, परंतु पूर्वे करेला कर्मनुं स्वरूप चिंतने, तो परिसह पीने नहि.

२१ अत्राण एटले अज्ञान परिसह.ते पूर्वोक्त प्रज्ञानीपेरे अज्ञान पण सहन करवु, माटे प्रज्ञा पठी एक-वीशमो अज्ञान परिसह गणयो ठे. श्रुतज्ञानथी वस्तु-नु तत्र जणाय ठे, अने तेनो जे अज्ञाव ते अज्ञान परिसह कहीए ते आवी रीते -साधु मनमां एम न जाणे, जे मे अत्रतिपणु त्यागीने अत्रतिपणु अंगीकार कर्युं ठे, तोपण हु कांश् पण जाणतो नथी, तेमज में जद्रा महा-जद्रादिक तप पन्निवज्यां तथा उपधान जे आयविल प्रमुख अने मासिकादिक प्रतिमा वही,एवी रीते क्रियाये हुं चालुतु, तो पण हुं सारु मातुं कांश् जाणतो नथी केमके हु आगम ज्ञान रहित तुं, माटे निरक्षर कुर्क्षर एवा मने धिक्कार ठे. एवी दीनता न करे, परंतु

(एण)

इवे सात परिसह चारित्र मोहनीयना उदयथी
थाय ठे, ते कहे ठे—

१ क्रोधना उदयथी आक्रोशपरिसह थाय ठे.

२ अरति परिसह ते अरति मोहनीयना उद-
यथी थाय ठे

३ पुरुष वेदना उदयथी स्त्रीपरिसह थाय ठे.

४ नैपेधिकी परिसह ते ज्ञय मोहनीयना उद-
यथी थाय ठे

५ जुगुप्सा मोहनीयना उदयथी अचेलक परि-
सह थाय ठे

६ याचना परिसह ते मान मोहनीयना उद-
यथी थाय ठे

७ लोभ मोहनीयना उदयथी सत्कार पुरुषकार प-
रिसह थाय ठे

तथा १ लुधा, २ पिपासा, ३ शीत, ४ उष्ण, ५ दंश,
६ चर्या, ७ शय्या, ८ मल, ९ वध, १० रोग, ११ तृण-
स्पर्श, १२ अगीवार परिसह, वेदनीय कर्मना उदयथी

थाय ठे, शेष कर्मोंने विषे परिसहनों अत्रतार नथी.
एव वावीस थया.

हवे चौद गुणठाणाने विषे परिसहोने समवतारी
देखामे ठे, तिहां ए क्षुधादिक वावीसे परिसह यावत्
वादर सपराय नामा नवमा गुणठाणा सुधी थाय ठे,
अने सूक्ष्म सपराय नामा दसमे गुणठाणे ता पूर्वो-
क्त चारित्र मोहनीयना क्षयोपशमना प्रतिवधथी त-
था सात परिसह तथा एक दर्शन मोहनीय प्रतिवध
मलीने आठ परिसह न थाय, शेष क्षुधादिक अनुक्रमे
पांच परिसह, ६ चर्या, ७ शय्या, ८ वध, ९ अला-
न, १० रोग, ११ तृणस्पर्श, १२ मल, १३ प्रज्ञा,
१४ अज्ञान, ए चौद थाय ठे वली अगीधारमा उप-
शातमोह अने वारमा क्षीणमोह गुणठाणे पण पूर्वे
कहेला चौद परिसहज थाय ठे हवे तेरमे सयोगी
तथा चौदमे अयोगी ए वे गुणठाणे तो अनुक्रमे क्षु-
धादिक पाच, ६ चर्या, ७ वध, ८ मल, शय्या, १०
रोग, ११ तृण स्पर्श ए अगीधार परिसह मात्र वेद-

नीय कर्मना प्रतिवद्धयी थाय ठे

ए बावीस परिसह माहेली शीत अने उष्ण तथा चर्या के० (चालवु) अने निपिया के० (रहेवु) ए चारे समकाले वने नहिं, परंतु एना प्रतिपक्षी वे परिसह समकाले वत्ते, माटे उत्कृष्टयी एक प्राणीने विषे समकाले बीसपरिसहनो उदय थाय, अने जघन्यथी तो शीत अथवा उष्ण तथा चर्या अथवा निपिया, ए चार माहेला एकनोज उदय थाय, केमके ज्या शीत होय, त्या उष्ण न होय अने ज्या चर्या होय त्या निपिया न होय इत्यादिक माहेलो एक थका देनो अज्ञाव होय ए परिसह माहेलो एक स्त्री, बीजो प्रज्ञा, त्रीजो सत्कार, ए त्रण परिसह, अनुकुल जाणवा अने शेष उंगणीश परिसह प्रतिकूल जाणवा. वली स्त्री, तथा सत्कार ए वे ज्ञाव शीतल परिसह ठे, अने शेष परिसह उष्ण ठे, इति परिसह विचार सपूर्ण ॥

गाथा १ए मीना वृंटा शब्दना अर्थ.

खती=कृपा.
 अज्ञव=आर्यव
 मद्दव=मार्दव
 मुत्ती=मुक्ति.
 तव=तप.
 सजमे=सयम.

बोधवे=जाणवा
 सच्च=सत्य.
 सोअ=शौच.
 अकिंचण=अकिंचन.
 वज्र=ब्रह्मचर्य
 जइधम्मो=यतिधर्म

खंती मद्दव अज्ञव, मुत्ती तव संजमेअ
 बोधवे ॥ सच्चं सोअ अकिंच, चणं च वंजं च
 जइ धम्मो ॥ २ए ॥

शब्दार्थः-कृपा, मार्दव, आर्जव, मुक्ति, तप, सयम, सत्य, शौच
 अकिंचन अने ब्रह्मचर्य ए दस प्रकारे यतिधर्म जाणवो.

विस्तारार्थ -क्रोधनो जे अज्ञाव, ते पहेलो (खती)
 एटले कृमाधर्म माननो जे त्याग ते (मद्दव) एटले
 मार्दव धर्म, माया एटले कपट तेनो जे त्याग ते
 त्रीजो (अज्ञव) एटले आर्यव धर्म, निर्लोभता ते
 चोथो (मुत्ती) एटले मुक्ति धर्म, पांचमो (तव)
 एटले तपो धर्म ते इठानो निरोध करवो प्राणा-

तिपातादिक पाचनु जे विरमण, तथा पाच इन्द्रि-
 योनो निग्रह, चार कपायनो जय, अने त्रण दंरु-
 नी निवृत्ति ए सत्तर जेदे ठठो (संजमे) एटले
 सयम धर्म सत्य बोलबु ते सातमो (सच्चं) एटले
 सत्य धर्म तथा हाथ पग प्रमुख जे शरीरना अवयवो
 पवित्र राखवा अने ज्ञात पाणी प्रमुख वेतालीश दोष
 रहित आहार लेवो, ते सर्व द्रव्यथी शौच अने आ-
 त्माना जे शुद्ध अध्यवसाय कपायादिके रहित शुद्ध
 परिणामनी वृद्धि ते ज्ञाव शौच, अथवा मन, वचन,
 अने कायाने शुद्ध राखवा, संयमने विषे निरतिचार-
 पणु तथा जीव अदत्त, स्वामी अदत्त, गुरु अदत्त,
 अने तीर्थकर अदत्त, ए चार प्रकारनी चोरीनो त्याग
 करवो, ते आठमो (सोअ) एटले शौच धर्म सम-
 स्त परिग्रह त्याग रूप मुर्छा रहित थबु, ते नवमो
 (अकिचण) एटले अकिंचन धर्म नव प्रकारे औ-
 दारिक, अने नव प्रकारे वैक्रिय सबधी मैथुननो
 त्याग करवो, ते दसमो (वज्र) एटले ब्रह्मचर्य
 धर्म एवी रीते (जइधम्मो) एटले यतिनो धर्म

ते उपर देखानेला दस प्रकारनो (बोधवे) एटखे
जाणवो ए दश गुणे सहित होय, ते यति जाणवो.
आ आर्यामां त्रण चकार ठे, ते पाद पूर्णार्थ तथा
उजयान्वयी अव्यय ठे. ॥ २९ ॥

गाथा ३० मीना ठूटा शब्दना अर्थ

पढम=प्रथम.

अण्णिच=अनित्य

असरण=अशरण.

संसारो=ससार

एगया=एकत्व.

अस्सत्त=अन्यत्व

असुइत्त=असुचित्त

आसव=आश्रव.

सवरो=सवर.

तह=तेमज.

निज्जारा=निर्जरा

नवमी=नवमी

हवे वार जाववानु वर्णन करे ठे -

पढम मण्णिच मसरणं, संसारो एगयाय
अस्सत्तं ॥ असुइत्तं आसवसं, वरो अ तह नि
ज्जारा नवमी ॥ ३० ॥

शब्दार्थः-पहेली अनित्य, वीजी असरण, वीजी ससार, चौथी
एकत्व, पाचमी अन्यत्व, ठवी असुचित्त, सातमी आश्रव,
आठमी सवर, तेमज नवमी निर्जरा जावना जाणवी.

विस्तारार्थ.—(पढम) एटले प्रथम (अणिच्चं) एटले अनित्य ज्ञावना ते लदमी, यौवन, कुटुव, परिवार, तथा आउखा प्रमुखने विपे जे अनित्यतानी ज्ञावना करवी, एटले ससारना सर्व पदार्थ ते कुशाग्रस्थ जल विंदुनीपरे अनित्य अस्थिर जाणे

२ (असरण) एटले अशरण ज्ञावना

मरण समये चक्रवर्ती, इद्र, अथवा तीर्थकर प्रमुख गमे तेवो मोटो पुरुष होय, तेने पण धन कुटुवादिक कोशु शरण मलतु नथी, ससारमाहे जन्म, जरा, अने मरणना ज्ञयथी राखवाने एक धर्म विना वीजु कोशु शरण नथी, एवी जे ज्ञावना करवी, ते

३ (ससारो) एटले ससार ज्ञावना

माता ते स्त्री थाय, स्त्री ते माता थाय, पिता ते पुत्र थाय, पुत्र ते पिता थाय, इत्यादिक आ जीवे ससारने विपे सर्व ज्ञावनो अनुभव कर्यो ठे, एवी जे ज्ञावना करवी, ते.

४ (एगयार्थ) एटले एकता ज्ञावना ते आ जीव संसारमां एकव्रो आव्यो ठे, एकलो जशे अने एकलो सुख तथा दुख जोगवशे. परंतु कोइ साथी थवानो नथी एवी जे ज्ञावना करवी ते.

५ (अणत्त) एटले अन्यत्व ज्ञावना ते आत्मा ज्ञान स्वरूप ठे, अने शरीर जरु ठे माटे परस्पर जिन्न ठे, आत्मा ते शरीर नथी ने शरीर ते आत्मा नथी, आत्मार्थी शरीर अन्य ठे, तेमज धन तथा स्व-जनादिक पण अन्य ठे, एवी जे ज्ञावना करवी ते.

६ (असुइत्त) एटले अशुचित्व ज्ञावना ते रस, रुधिर, मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य परु तथा आंतर मा इत्यादिक अमेध्य वस्तुजुंथी शरीरजरेखुं ठे अने जेना नव द्वारो सदा घरना खालनी पठे वहेतां रहे ठे. ए शरीर कोइ काले पण पवित्र होतुं नथी एवी ज्ञावना करवी ते

७ (आसव) एटले आश्रव ज्ञावना ते मिथ्या-त्त्व, अविरति, प्रमाद, कपाय तथा योग, ए पांच

(१०६)

प्रकारना आश्रवे करीने कर्म वधाय ठे अथवा दया दानादिके करि शुद्ध कर्म वंधाय ठे अने विषय कषायादिके करी अशुद्ध कर्म वधाय ठे, एवी ज्ञावना करवी ते

७ (सवरो) एटले सवर ज्ञावना ते जे जे सवर थकी जे जे आश्रव रोकाय, ते ते आश्रवनु रोकवु, अने ते ते सवरनु जे आदरवु, एटले जेम हमादिक संवरवमे क्रोधादिक आश्रव रोकाय ठे, शत्यादिक ज्ञावना करवी

८ (णिज्जरा) एटले निर्जरा ज्ञावना ते (तह) एटले तेमज सकीर्ण स्थानकने योगे जेम आम्रफल पाके ठे तेम वार प्रकारना तपे करीने कर्मने पचाववुं अर्थात् पूर्वे सचेला कर्मनु सारवु, ते रूप निर्जरा, सकाम अने अकाम ए वे जेदे ठे एवी ज्ञावना करवी आ गाथामा वे चकार ठे ते पाद पूर्णार्थ तथा उज्जयान्वयी अव्यय ठे ॥ ३० ॥

गाथा ३१ मीना वृटा शब्दोना अर्थ.

लोगसहावो=लोक स्वजाव.

वोही=वोधी.

डलहा=डलज.

धम्मस्स=धर्मना.

साहगा=सायक

अरिहा=अरिहतादिक.

एआओ=ए.

जावणाओ=जावनाओ.

जावेअवा=जाववी

पयत्तेण=प्रयत्ने करीने.

लोगसहावो वोही, डलहा धम्मस्स सा-
हगा अरिहा ॥ एआओ जावणाओ, जावेअवा
पयत्तेणं ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ.-दसमी लोक स्वजाव, अग्यारमी वोधी डलज, वा-
रमी धर्मना सायक अरिहत मलवा डलज ठे. ए जावना
प्रयत्ने करीने जाववी

विस्तारार्थ.-दसमी (लोगसहावो) एटले लोकस्व-
जाव जावना ते केरु उपर वे हाथ दइने तथा वन्ने
पग पसारीने उन्नेला पुरुपना जेवो जेनो समआकार
परु ड्रव्यात्मक ठे, पूर्व पर्याय विणसे नवा पर्याय उ-
त्पन्न थाय, अने ड्रव्यपणे निश्चल होय, उत्पाद, वयय,
तथा ध्रौव्य स्वरूप चौद राजलोक ठे. तेनु नीचेनुं

तलीयु उधा वालेला मद्धक (चपणीया) सरखु ठे. तथा मध्य जाग जालर सरखो ठे, अने उपरनो जाग मृदग सरखो एवो शाश्वत ठे इत्यादिक लोक स्वरूपनी जावना करवी अगियारमी (चोही एटले) वोधि दुर्लज्ज जावना ते जीवने ससारमा जमतां अनता पुज्जल परावर्त्त थइ गया, तेमा अनतीवार चक्रवर्त्यादिक जेवी रुद्धि प्राप्त थइ, तथा यथा प्रवृत्तिकरणे योगे करी अकाम निर्जरावके पुन्यना प्रयोगथी मनुष्य जव, आर्य देश, निरोगीपणु तथा धर्मश्रवणादिकनी प्राप्ती थइ, तथापि सम्यक्त्व प्राप्त थवु अति दुर्लज्ज ठे, एवी जावना करवी ते

अने जे दु खे करीने तरी शक्राय एवा ससार समुद्रमाथी तारवाने वहाण समान ते श्री जिनेश्वर जगवाने कहेलो दस प्रकारनो जे क्षमादिक शुद्ध धर्म, तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ए रत्नत्रयात्मक धर्म, ते पामवो दुर्लज्ज ठे तथा ते धर्मना (साहगा) एटले साधक (अरिहा) एटले अरिहतादिक ते पण आ ससारने विषे पामवा (दुलहा) एटले

दुर्लभ हैं एवं जे चितवबुं, ते वारमी (धम्मस्स)
 एटले धर्मनी जावना ए रीते सम्यग् दृष्टिये (पय-
 त्तेण) एटले उद्यमे करीने (ए आउ) एटले ए
 कहेली (जावणाउ) एटले वार जावनाउ तेने प्रमाद-
 रहित अश्ने शुद्ध मने करी (जावे अवा) एटले
 जाववी, तथा पाच महाव्रत माहेली एकेका महाव्रतनी।
 पांच पांच जावना मलीने पच्चीश जावना ठे ते पण
 एमां अतर्जाव ठे तथा मैत्रो, प्रमोद, कारुण्य अने
 उपेक्षा ए चारनी साथे पूर्वोक्त वार जावना मेलवि-
 ये ते वारे सोल जावना थाय ठे तेनो विचार उपा-
 ध्याय श्री विनविजयजीकृत शात सुधारस ग्रंथ
 यकी विस्तारे जाणवो ॥ ३१ ॥

गाथा ३२ मीना वृटा शब्दना अर्थ.

सामाइ=सामापिक

अय्य=अर्हीआ

पढम=पहेलु

ठेओवजावण=ठेओपस्थापनीय

जवे=ठे.

वीअ=वीजु.

परिहारविमुद्धीअ=परिहारविशुद्धि

मुहुम=सूद्धम.

तह=तेमन

सपगाय=सपराय

(११०)

हवे पाच प्रकारना चारित्रनु वर्णन करे ठे

समाइ अन्नपढमं, ठेन्नवठावणं जवेवी-
अ ॥ परिहार विसुद्धीअं, सुहुमं तह संप-
रायं च ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ -अहिं पहिलु सामायिक, वीजु ठेदोपस्यापनीय, वीजु
परिहारविशुद्धि अने तेमज चोथु मूढमसपराय चारित्र.

विस्तारार्थ -आ उपर कहेला पाच चारित्रमा (अष्ट)
एटले अहीआ (पढम) एटले पहिलु चारित्र
(सामाइ) एटले सामायिक ठे, तेनो अर्थ करे ठे.
सामायिक ए शब्द सम अने आयिक ए वे पदोनो
वनेलो ठे अहीं सम एटले रागद्वेष रहितपणाने माटे
आव एटले गमन प्रयाण ठे जिहा ते सम कहिये, ते
ज्या उपन्यु ते सामायिक, वली सम ते ज्ञान, दर्शन
तथा चारित्र, तेनो आयिक जे लाज ज्या थाय ठे ए
टले जेणे करी ज्ञान, दर्शन, तथा चारित्र, एत्रणेनी
प्राप्ति थाय ठे, तेने सर्व साव्ययोग त्यागरूप, अने नि-
रव्ययोग सेवनरूप सामायिक कहिये. श्रावकने

देश विरतिरूप सामायिक अने साधुने सर्व सावद्य विरतिरूप सामायिक होय, तेना वे जेद ठे तेमां अरत ऐरवतादिक दश क्षेत्रने विपे पहेला तथा ठे-
 द्या जिनना वारामां सर्व विरति सामायिकदंरुकनो उच्चार करावे, ते इत्वरिक उठामण कर्या सुधी जे रहे, ते इत्वरिक एटले स्वल्पकाल जावी सामायिक कहीये, अने वचला चावीस जिनोना वारामां तथा माहाविदेह क्षेत्रमां यावत्कथिक एटले सामायिक उच्चर्या पठी निरतिचारज पाले ठे, तेथी तेने उठामण नहिं होवाने लीधे जाव जीव लगे रहे, माटे यावत्कथिक चारित्र कहीए. एने सम्यक् चारित्र पण कहे ठे ए सामायिकचारित्र जीवने प्राप्त थया विना बीजां चारित्रोनो क्षात्र थाय नहि, माटे एने आदिमा कहु ठे

(वीथ) एटले बीजु (ठेउवघावणं) एटले छे दोपस्थापनीय चारित्र (जेवे) एटले ठे, ते पूर्वे कहेला सर्व विरति सामायिक चारित्रने ज ठेदादि

(११२)

विशेषपणे विशेषीये, तेवारे शब्दथी तथा अर्थथी नाना प्रकारपणु ज्ञे, तेवारे वेदोपस्थापनीय चारित्र्य थाय तिहा वेद एटले पूर्व पर्यायनो वेद करवो-अने उपस्थापन एटले गणाधिपे आपेलु पच महाव्रत रूपपणु जे महाव्रतने विषे होय, ते वेदोपस्थापनीय कहिये, एटले ज्या नवा पर्यायोनु स्थापन करवु, तथा पच महाव्रतनो उच्चार कराववो ते पण वे जेदे एक सातिचार ते मूलगुण घातीने प्रायश्चित रूप अने बीजो निरतिचार, ते इत्वर सामायिक वंत नव दीक्षित शिष्यने ठळीवणीया अध्ययन ज्ञेया पठी होय, तथा बीजो तीर्थ आश्रयी ते जेम श्री पार्श्वनाथना तीर्थथी वर्द्धनान स्वामीना तीर्थे आवी चार महाव्रत रूप धर्म त्यागीने पच महाव्रत रूप धर्म आदरे, तेने होय

३ (परिहार विसुद्धीअ) एटले परिहार विशुद्धि चारित्र्यना पर्याय कहीए ठीए तिहां (परिहार) एटले तपो विशेष, तेणे करी विशुद्धि एटले कर्मनी निर्जरा,

जे चारित्रने विषे होय तेने परिहार वैशुद्धिक चारित्र कहीये, ते वे जेदे ठे तेमा पहेंलुं जे चार जण विवक्षित चारित्रना आसेवक ए कल्पमां प्रवर्तता होय तेनु चारित्र ते निर्विषमानसिक परिहार विशुद्धिक चारित्र जाणवुं, अने बीजुं जे चार जण तेना अनुचारी होय तेने निर्विष्टकायिक परिहार विशुद्धिक चारित्र जाणवु, ते आवी रीतेः—नव जणानो गठ जूदो नीकले, ते तिर्यंकर पासे अथवा, पूर्वे जेणे तीर्यंकर पासेथी ए चारित्र पन्निवज्यु होय, तेनी पासे ए चारित्र पन्निवळे हवे ते नव साधुमा चार जण परिहारक एटले तपना करनारा थाय, ते निर्विषमानसिक जाणवा, अने चार तेना वैयावचना करनारा थाय, ते निर्विष्टकायिक जाणवा. तथा एकने वाचनाचार्य गुरुस्थानके ठरावे पठी ते चार परिहारक ठ मास सुधि तप करे, तेमा ऊष्णकाले जघन्यथी चोथ मध्यमथी ठठ अने उत्कृष्टथी अष्टम एवु तप करे, अने शीतकाले जघन्यथी ठठ मध्यमथी अष्टम, अने उत्कृष्टथी दशम करे, तथा वर्षाकाले जघन्यथी अष्टम, मध्यमथी दशम, अने उत्कृष्टथी दुवालस तप करे, पारणे आंवील कल्प स्थितपणे नित्य करे एम ठ म-

हिना तप करे, ते पठी फरी चार तपस्याना करनार,
 ते वैयावञ्चीया थाय, अने वैयावञ्च करनारा तपिया था-
 य, ते पण ठ मास लगे तप करे, ते पूर्ण थया पठी जे गुरु
 थया होय, ते ठ महिना तप करे, त्यारे ते आठ मांहेलो
 एक गुरु थाय, वाकीना वैयावञ्चकरे एम अठार महिना
 सुधी तप सपूर्ण करी, पठी जिनकल्प आदरे, अथवा
 गण्डमा पण आवे. तप जे प्रथम सघयणी, पूर्वधर ल-
 विधवत होय ते प्रचुर कर्मना परिपाकने अर्थ अगी-
 कार करे, ए चारित्र, पाच ज्ञरत, पांच ऐरवतमा प-
 हेला अने ठेह्वा तीर्थकरना तीर्थमा होय ए परिहार
 विशुद्धि चारित्रनो सक्षेपथी विचार कह्यो.

(तह) एटले तेमज चोथो (सुहुम) एटले सूक्ष्म
 ठे (सपराय) एटले कपाय ज्या तेने सूक्ष्म
 संपराय चारित्र कह्ये, ते उपशम श्रेणिये कर्म उप-
 शमावता होय तिहां नवमा गुणठाणे लोचना सं-
 रयाता खरु करी तेने उपशम श्रेणिवालो जे होय
 ते उपशमावे अथवा क्षपक होय ते खपावे ते सं-
 ख्याता खरु मांहेलो जेवारे ठेह्वा एक खरु रहे,
 तेना असख्याता सूक्ष्म खरु करीने, दशमे गुणठाणे
 उपशमावे, अथवा क्षपक होय ते खपावे, ते दशमा

गुणठाणानुं नाम सूक्ष्मसंपराय, अने, चारित्रनुं नाम-
 पण सूक्ष्म संपराय जाणवुं ए चारित्र वे ज्ञेदे ठे,
 एक श्रेणि चढताने त्रिशुद्ध मानसिक होय, बीजो, ज्ञ-
 पशम श्रेणिथी परताने सहिष्ट मानसिक जाणवुं-
 औपशमिकने ए चारित्र आखा संसारमां पांचवार
 अने एक ज्ञवमां वेवार आवे ॥ ३२ ॥

गाथा ३३ मीना वृटा शब्दना अर्थ

तत्तो=तेवार पठी

अहस्काय=यथाखात

खाय=प्रसिद्ध

सव्वमि=समस्त

जीवलोगमि=जीवलोकने विपे

ज=जे

चरिजण=आचरीने

सुविहिआ=सुविहित साधु-

अयरामर=अजरामर

ठाण=स्थानकने

वच्चति=पामेठे

तत्तोअ अहस्काय, खायं सव्वमि जीव-
 लोमंमि ॥ जं चरिजण सुविहिआ, वच्चति
 अयरामरं ठाण ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ.-वली त्थारपठी सर्व लोकमां प्रसिद्ध एवु पांचमु, यथा-
 ख्यात चारित्र ठे के, जे चारित्रने पाली सुविहित पुरुषो मे-
 ढ्हास्थानने पामे ठे ॥ ३३ ॥

विस्तारार्थ -(तत्तो) एटले तेवार पठी पांचमुं (अह-
 स्काय) एटले यथाख्यात चारित्र, ते ज्यां (

एटले यथाविध करीने अकपायपणु अर्थात् ज्यां सं-
 ज्वलनादिके करी सर्वधारहितपणुं (रयात) एटले
 कहीये, ते यथाख्यात चारित्र जाणवु तेना वे जेद
 ठे एक ठग्गस्थिक अने वीजु कैवलिक, तिहा ठग्ग-
 स्थिक ते ठग्गस्थ औपशमिकने अगीधारमे गुणठाणे
 होय, अने रूपकने वारमे गुणठाणे होय, वीजो जे
 केवलीने तेरमे अने चउदमे गुणठाणे होय, ते कैव
 लिक जाणवु ए चारित्र (सबमि) एटले समस्त
 एवा (जीवलोगमि) एटले जीवलोकने विषे केवुं
 ठे तो के (खाय) एटले प्रसिद्ध ठे हवे ते केवी
 रीते प्रासद्ध ठे ते कहे ठे (ज) एटले जे चारित्र
 प्रत्ये (चरित्रण) एटले आचरीने (सुविहिआ) एटले
 सुनिहित साधु ते (अयरामरठाण) एटले अजरा-
 म्मर स्थानक प्रत्ये (वच्चति) एटले पामे ठे, एटले
 जन्म, जरा अने मरण तेणे रहित एवु जे मोक्षरूप
 स्थानक, ते प्रत्ये पामे ठे ॥ ३३ ॥

इतश्री सवरतत्त्व विचार समाप्त. ॥६॥

गाथा ३४ मीना वृटा शब्दना अर्थ

चारस=चार.

विह=मकारे,

तवो=तप

इण्ड राय=निर्भरा

वधो=वधतत्त्व -

चउ=चार

विगण्पो=विकल्पो.

पयई=मकृति.

ठिङ्=स्थिति

अणुजाग=अनुजागरस.

पएस-प्रदेश

जेएहि=जेदबडे.

नायवो=जाणवो.

अथ निर्जरातत्त्व विचारः प्रारभ्यते ॥

वारसविदं तवो नि,ज्जराय वंधो चउ विग-
प्पो अ ॥ पयई ठिङ् अणुजाग, पएस जेएहि
नायवो ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ.—आ ठपर कहेलो वार प्रकासनो तप ते निर्जरा जाणवो.
अने वध ते चार प्रकारनो ठे, ते प्रकृतिवध, स्थितिबध, अनु-
जागवध अने प्रदेशवध एवा जेदोए कगीने जाणवो ॥ ३४ ॥

विस्तरार्थ.—गाथाना पूर्वार्द्धमाता एकएक वाक्येकरि
निर्जरातत्त्वनु वर्णन करे ठे.

निर्जराना वे प्रकार ठे एक द्रव्य निर्जरा, बीजि
जाव निर्जरा, तथा सकाम अने अकाम एवा वे जेदे
पण निर्जरा ठे, ते कहे ठे -

द्रव्यनिर्जरा एटलेपुद्गलकर्मनु सारुवुअनेआत्माना
शुद्ध परिणामे करी कर्मनी स्थिति जे पोतानीमेलेपाके.
अथवा वार प्रकारना तपेकरी नीरस कर्या एवा जे कर्म
परमाणुतेजेनाथीसके, एवाजे आत्माना परिणाम थाय
तेजावनिर्जराजाणवी तथा तिर्यचादिकनी पेठेष्टावि-

ना कष्ट सहनकरताकर्मपुञ्जलनुजेक्षण थायठे, तेने उ-
 ष्यनिर्जराअथवाअकामनिर्जराकहीये, अनेसयमीथकां
 वार प्रकारना तपे करी कष्ट सहन कर्या थकी जे कर्म
 परमाणुनु क्षण करवु अथवा सारुवुं, तेने ज्ञाव नि-
 र्जरा अथवा सकामनिर्जरा कहीये, ए वे निर्जरामां
 ज्ञावनिर्जरा अथवा सकामनिर्जरा श्रेष्ठ ठे, ते (णि-
 ज्जराय) एटले निर्जरातत्त्व (वारसविह) एटले वार
 प्रकारना (तवो) एटले तप, तेना जेदेकरी कहु ठे
 एटले अनादि सवध सर्व कर्मोनु परिशाटन वार प्र-
 कारना तप कर्याथी थाय ठे, तेनेज सातमु निर्जरा
 तत्त्व कहे ठे अथवा (वारस विहृतवोणिज्जराय) ए-
 टले वार प्रकारनो तप जे आगळी गाथाये कहेशे, ते
 तप, निर्जराने अर्थे ठे

हवे गाथाना पूर्वार्द्धमाना “वधो” ए शब्दथी
 चधतत्त्वनो आरज्ज थाय ठे, (वधो) एटले वधतत्त्व
 एटले कर्मनु वांधवु ते (चउविगप्पो) एटले चार
 जेदे ठे, ते आ प्रमाणे —

१ (पयई) एटले प्रकृतिबंध ते कर्मनुं स्वज्ञाव
 परिणमन रूप ठे

२ (ढिइ) एटले स्थिति एटले स्थितिवंध, ते क-

र्मनुं कालपरिमाण रूप ठे.

३ (अणुजाग) एटले अनुजागबंध, ते कर्मनुं ती-
व्र मंदादि रसपरिमाणरूप ठे

४ (पएस) एटले प्रदेश एटले प्रदेशबंध ते कर्म
पुद्गलना प्रदेश परिमाणरूप ठे. ए चार (जेएहिं)
एटले जेदोए करीने वधतत्वने सम्यक्दृष्टि जीवे
(नायवो) एटले जाणवो ॥ ३४ ॥

गाथा ३५ मीना वुटा शब्दना अर्थ.

अणसण=अनशन

ऊणोअरिया=ऊणोदरिका.

वित्तीसंखेवण=वृत्तिसंक्षेप

रसचाओ=रसत्याग

कायकिलेसो=कायक्लेश

सलिण्या=सलीनता

वज्जो=वाह्य.

तवो=तप.

होई-ठे.

अणसण मूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं र-
सञ्चान ॥ कायकिलेसो सलि, णआय वज्जो
तवो होई ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ.-अनशन, उणोदरिका, वृत्तिसंक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश,
अने सलीनता ए ठ प्रकारे वाह्य तप होय ठे

विस्तारार्थ:-पहेलु (अणसण) एटले अनशन तप
ते आहारनुं त्याग करवुं, तेना वे जेद ठे.-एक इत्व

अने बीजो यावत्कथिक. तिहां ठेह्या तीर्थकरने वारे ठठ, अठमादकथी मांकीने ठमासी पर्यंत, अनेक विधिये जे नियमयुक्त अनशननो त्याग करवो, ते इत्वर अनशन कहीये

अने यावत्कथिक ते जावजीव अनशन ग्रहणरूप तेना वे जेद ठे -

एक पादोपगम, बीजु ज्ञत्त पञ्चस्काण ए वझेना वली निहारिम अने अनिहारिम, ए वे वे जेद ठे, तिहा अनशन कीधा पठी शरीरने बाहिर काढवु पने, ते निहारिम अने अनशन कीधा पठी तेहिज स्थानके रहेवु, परंतु शरीरने त्याथी बहार काढवुं न पने, गुफादिक माहिज राखवु पने, ते अनिहारिम.

बीजु (उणोअरिश्वा) एटले उणोदरिका तप ते अशन प्रमुखनी न्यूनता करवी, तेना वे जेद ठे एक ड्रव्यथी, बीजु ज्ञावथी, तेमाना ड्रव्य उणोदरिना वे जेद ठे एक उपकरणनो न्यूनता करवी बीजु ज्ञात पाणोनो न्यूनता करवी तथा ज्ञावथी उणोदरी ते रागादिक क्रोधादिक अद्वप करवा, एटले तेउनी न्यूनता करवी

त्रीजु (वित्तीसखेवण) एटले वृत्ती सक्षेप तप तेना

र जेद ठे. एक ड्रव्यथी, वीजु क्षेत्रथी, त्रीजु का-
थी, अने चोथु ज्ञावथी. ए चार प्रकारे वृत्ति एटले
जाजीविका तेनो संक्षेप करवो, एटले अग्निग्रह क-
वा नियमादिक धारवा.

चोथुं (रसच्चाज) एटले रस त्याग ते नीवी तथा
प्रांवीलप्रमुखनुंकरवु, विगयादिक रसनोत्याग करवो-
पांचमुं (कायकिलेसो) एटले कायक्लेश तप ते
जोचादिक कष्टनु सहन करवु, कायोत्सर्ग करवो, तथा
जल्कटादिक आसननुं करवुं

ठवु (संलीण्या) एटले सलीनता तप ते अंगो-
पांगादिकनु सवरवु, गोपन करवुं तेना चार जेद ठे.
पहेलुं इन्द्रिय सलीनता, वीजु कपाय सलीनता, त्री-
जु योग सलीनता अने चोथुं विविक्त चर्या सलीनता,
एटले एकांत वस्तीये रहेवु ए रीते ठ प्रकारनो वाह्य
तप, ते सर्वथी तथा देशथी एवा वे जेदे जाणवुं जे
कष्टने मिथ्यात्वीयो पण तप करी मानेठे, जेने लोक
पण देखी शके ठे, जेथी कष्ट घणु ने लाज्ज अल्प थाय,
अने वाह्य शरीरने तपावे, तेथी ए ठ प्रकारनो (वज्जो)
एटले वाह्य (तवो) एटले तप (होइ) एटले ठे.

(१२२)

गाथा ३६ मीना वृटा शब्दोना अर्थ.

पायञ्चित्त-प्रायश्चित्त
विणञ्चो-विनय
वेयावच्च-वैयावृत्य
तद्देव-तेमज.
'सज्जाञ्चो-स्वाध्याय

ज्ञाण-ध्यान.
उस्सग्गोविञ्च-कायोत्सर्ग.
अञ्जितरञ्चो-अञ्जतर
तवो-तप.
होई-उ

ठ प्रकारना अञ्जतर तपनु कथन करे ठे

पायञ्चित्तं, विणञ्च, वेयावच्चं तद्देव सज्जा-

ञ ॥ ज्ञाणं उस्सग्गोविञ्च, अञ्जितरञ्च तवो
होई ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ -प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, तेमज स्वाध्याय, ध्यान अने
कायोत्सर्ग ए अञ्जतर तप होय ठे ॥ ३६ ॥

विस्तारार्थ- पहेंलु (पायञ्चित्त) एटले प्रायश्चित्त तप
ते करेला अपराधनी शुद्धि करवी, कोइ लागेला दोषने
गुरु आगल कपटरहितपणे प्रकाश करी तेनी गुरु
पासे आलोचना लेवी तेना दस जेद ठे मात्र गुरुनी
आगल पोताना करेला अपराधनु कथन करवु, तथा
गोचरी प्रमुखनु जे आलोचवु ते

१ आलोचन प्रायश्चित्त पूज्या विना मातरुं प्र-
मुख परठववाथी मिळामि डुक्करु देवु ते

२ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त. शब्दादिक विषय उपर रागादिक कर्माथी तेनुं आलोचन करवुं, अने बीजुं मिहामि डुकरु पण देवुं, एटले वनेवानां करवां ते.

३ मश्रप्रायश्चित्त अशुद्ध ज्ञात पाणी प्रमुखनो त्याग करवो ते

४ विवेक प्रायश्चित्त

५ कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त ते कुस्वप्न दीठायी कायोत्सर्ग करवो

६ तप प्रायश्चित्त ते पृथ्वीकाय प्रमुखनो सघट थवाथी नीवी प्रमुख जे ठ मासी पर्यंत तप करवो

७ वेद प्रायश्चित्त ते पृथिवि आदिकनो सघट थवाथी कांश्च दीक्षा पर्यायनी न्युनता थइ होय, ते अपराधनु निवारण करवा माटे जे दुर्दम तप करवोते.

८ मूल प्रायश्चित्त ते मूल गुण जग थवाथी सर्वथा व्रत पर्यायनुं वेदन थवाथी फरी जे महाव्रत खेवांते.

९ अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त ते अति सक्लिष्ट परिणामे करी कोश्नो घात पात थई गयो होय, तो सूत्रोमां कहेला त्रिधि प्रमाणे तप करवो अने त्यार पठी फरी महाव्रतनो जे आरोप करवो ते

१० पारांचित्त प्रायश्चित्त एटले

राजानी राणी प्रमुख स्त्रीने विषे संज्ञोग थयाथी चार वर्ष पर्यंत क्रिया सहित अने लिंगादिक जेदे रहित तीर्थ प्रजावना करी, फरी दीक्षा लक्ष गष्ठमा आववु ते

वीजु (विणुठ) एटले विनय तप ते गुणवतादिकनी जक्ति करवी, तथा अशातना टालवी, इत्यादिक एना सात जेदे ते तेमा प्रथम ज्ञाननो विनय, पाच जेदे ते

१ जक्ति विनय ते मत्यादि पाच प्रकारना ज्ञाननी चाह्यथी सेवा करवी ते

२ बहु मान विनय ते पाचे ज्ञाननु अतरग प्रीति सहित बहुमान करवु ते

३ ज्ञावना विनय एटले पाचे ज्ञाने करी दीठेला जाणेला पदार्थोनी सम्यक् प्रकारे जे अनुजवथी ज्ञावना करवी ते

४ विधि ग्रहण विनय ते पाचे ज्ञाननु विधिये करी ग्रहण करवु ते

५ अज्यास विनय ते पाचे ज्ञाननो जे अज्यास करवो ते

वीजो दर्शननो विनय वे प्रकारे ठे उचित क्रि-

यानुं साचवतुं ते पहेलो शुश्रूषा विनय अनुचित
क्रियाथी-निवृत्तुं ते अथवा आशातना करवी नहीं
ते, वीजो अनाशातना विनय एवी रीते दर्श-
ननो विनय वे प्रकारे ठे ए वे प्रकारनो । विनय कोने
विषे करवो ते कहे ठे जे साधु अथवा साधर्मी
पोताथी दर्शन गुणे करी अधिक होय, तेने विषे
शुश्रूषा विनय करवो ते शुश्रूषानुं स्वरूप दश प्र-
कारे ठे ते कहे ठे

१ सत्कार एटले स्तवन तथा वंदनादिक करवां,

२ अच्युतान एटले आसनथी उठवु,

३ सन्मान एटले वस्त्र तथा पात्रादिके करी पूजा
करवी

४ आसन परिग्रहण एटले अति आदरे करी आ-
सन लावी आर्षीने स्वामी आ आसन उपर बेसो,
एस मुखथी कहेवु

५ आसननु प्रदान एटले मुखे कहेवु एटलुंज नहीं
पण ते प्रमाणे आसन देवु.

६ कृतिकर्म एटले वदना करवी, ए साधु प्रमुख-
नी अपेक्षायें जाणवु.

७ अजली ग्रहण एटले हाथ जोडवा.

७ आवतानी सामे, जवु

८ वेठेलानी (पर्युपासना) एटले सेवा करवी,

१० जनाराने बोलाववा जवु

हवे बीजो अनाशातना विनय तेना पिस्तालीशं

जेद ठे, ते कहे ठे -

१ रुपन्नादिक चोवीश तीर्थकर,

२ जिनप्ररूपित धर्म,

३ धर्माचार्य अथवा प्रव्रजाचार्य

४ व्याख्यानकरनार, तथावाचनानाथापनारवाचक.

५ वय, पर्याय तथा श्रुत, ए त्रण प्रकारना थिविर.

६ कुल, ते चाद्रादिक एक आचार्यनी संतति,

७ गण, ते पोतपोतामा सापेक्ष कुलनो समुदाय

कोटिकादिक

८ सघ, ते ज्ञानादिक गुण सहित साधु समुदाय,

अथवा गण समुदायरूप तेने विषे

९ साजोगिक, ते एक मारुलीमा जे साथे व्यव-

हार होय ते

१० क्रियामा जे पोताना सरखी क्रियावाला

होय ते एमनी साथे मति ज्ञानादिक पाच ज्ञान

मेलवतां पदर थया तेने विषे १ आशातनानो त्याग-

करवो, २ जक्ति सहित बहु मान करवुं, ३ ठता गुणवर्णवीने यश कीर्ति दीपाववी ए रीते पूर्वोक्त पंदरने ए त्रणे गुणता अनाशातता विनयना पिस्ता-
खीश जेद थाय ठे

त्रीजो चारित्रनो विनय, पांच जेदे ठे, ते कहे ठे.-सामायिक प्रमुख पाच चारित्रोनी सहहणा करवी, तेमज कायाये करी फरसवुं, आदरवु, पालवुं. तेमज जेव्य प्राणीनी आगल प्ररूपणा करवी.

त्रण प्रकारना योगनो विनय कहे ठे- आचार्यादिकोनों सर्व कालने विषे मन, वचन, तथा कायाये करी विनय करवो एटले मने करी मातु चिंतववुं नहीं, वचने करी मातु बोलवु नहीं, तथा कायाये करी माठी प्रवृत्ति करवी नहीं तेवी रीतेज ते आचार्यादिकने विषे मन, वचन अने कायाने शुज प्रवृत्तिनां उदीरवा प्रवर्त्ताववा ए रीते त्रण प्रकारे योगनो विनय ते पूर्वोक्त त्रण विनयनी साथे जेलवतां ठ जेद विनयना थया.

सातमो लोकोपचार विनय सात जेदे ठे, ते कहे ठे.

१ गुह, प्रमुख जे श्रेष्ठ पुरुष होय तेउनी समीपे बसवु.

(१२८)

२ आराधना योग्य पुरुषनी इच्छाये प्रवर्त्तवुं

३ पोटानी उपर उपकार करे, तेनी उपर पाठो प्रत्युपकार करवो, एटले गुरुने जो हु विनये करी प्रसन्न करीश, तो ते मने शास्त्रदान देशे, एवा अ-
ज्ञिप्राये करी गुरुन ज्ञातपाणी प्रमुख लावी देवु

४ तेमज ज्ञानादिक जे कार्य तेनु कारण जे ज्ञा-
तपाणी प्रमुख, तेनु करवु एटले देवु

५ तथा दु खे करी पीनाएला जे ग्लानी तेनी
औषधादिके करी गवेपणा करवी

६ तेमज देश अने कालने जाणवा जे अवसरे
जे उचित होय ते अवसरे ते करवुं

७ वन्दिओ सवधि सर्व कार्योंने विषे अनुकूल-
पणुं एटले तेमना कार्य करवामा उजमालपणुं
राखवु इतिज्ञाव एवी रीते लोकोपचार विनय सात
प्रकारे ठे एम विनयना सात जेदे करी बीजो विनय
तप जाणवु जो के विनय तो एकज ठे, तोपण ज्ञान
दर्शन, चारित्र, मन, वचन काया अने लोकोपचार, ए
सात विषये करी विनय करीये, तेथी ए बीजो विन-
य तप पण सात प्रकारनो कह्यो ठे.

त्रीजु (वैयावच्च) एटले वैयावृत्यं तप ते ज्ञात

(१२९)

पाणी प्रमुख मेलवी आपवारूप उपपन्न देय, ते दश प्रकारना ठे यथा - आयरिय उवजाए, थेर तवस्सी गिलाण सेहाण ॥ ताहम्मी कुल गण सघ, वेयावच्चं हवइ दसहा ॥१॥ आचार्य ते जेनी पासेथी धर्म प्राप्त थाय ठे ते, उपाध्याय, ते जे ।वद्याअन्यास करावे ठे ते, स्थविर, ते ज्ञान, पर्याय, तथा वय, ए ङण प्रकारे तपस्वी, ते अरुम प्रमुख तप करनार होय ते. गिलाण ते ग्लान एटले रोगी होय ते सेहाण, ते शिष्य नवी दीज्ञा लीधेला होय साहम्मी, ते समान धर्मवान् होय ते कुज, ते चन्द्रादिक कुलवान् होय ते गण, ते कोटिक प्रमुख. सघ ते समुदायरूप होय ते एवी रीते ए दशनी अशन, पान, वस्त्र, पात्र, तथा औषध प्रमुखे करी यथायोग्य सेवा करवी तेने त्रीजो वैयावृत्य तप कहे ठे.

(तहेव) एटले तेमज चोथु (सजाउ) एटले स्वाध्याय ए नामनु तप, ते पांच जेदे ठे यथा "वायणा पुठणा चैव, तहाय परिअट्टणा, अणुप्पेहा धम्म कहा, सजाउ होइ पचहा" (वायणा) एटले वाचना ते पोते जणवु, शिष्यादिकने जणाववु, तथा वांचवु. (पृष्ठना) ते जे सूत्रार्थमा सदेह परुयार्थी गुरु आ

दिकने पूठवु, ते (तहाय) एटले तेवी रीते ज (परिश्रष्टणा) एटले परिवर्तना, ते पूर्वे शीखेलो जे अर्थ तेने फरी सज्जारवो ते (अनुप्रेक्षा) ते पूर्वे धारेला अर्थनु चिंतवन करवु ते (धम्मकहा) एटले धर्मसंवधी कथा कहेवी अथवा धर्मनो उपदेश करवो ए प्रकारे स्वाध्याय तप पाच जेदे थायठे, ते कह्यो

पाचमु (जाण) एटले ध्यान ते मननु एकाग्रताये अवलवन ते ध्यान तप, ते चार जेदे ठे

तेमा पहेलु आर्त्तध्यान तेना चार जेदे ठे -

ब्राता, मित्र, स्वजन, माता, पिता, सुहृद्, ऋत्य, तथा पशु प्रमुख जे पोताने इष्ट एटले अति प्रिय होय, तेमनो तथा शांतावेदनीय, तेज्जनों वियोग थवाथी जे चिंता, शोक, अथवा विलाप करवो, ते पहेलु इष्टवियोग आर्त्तध्यान मनने अणगमता जे विषय, अने तेना आधार-जुत जे गधेमा कोढीआप्रमुखअशुजनो सयोग थवाथी तेज्जने विषे छेप करी, जे वियोगनु चिंतवन करवुं ते वीजु अनिष्ट सयोग आर्त्तध्यान शरीरने विषे कोइ रोग नी उत्पत्ति थयाथी तेना संवधी जे चिंतादिकनुं करवु, ते त्रीजु रोगचिंता आर्त्तध्यान अमुक समयआव्याथी हु आकार्यकरीश इत्यादिक जविष्यकालनीजे शोचना

करवी, तथा दान, शील, तप प्रमुखे करीने पठीतेना फलनी जे इष्टा करवी, अथवा आ जवने विषे में एवो उग्रतप कर्यो ठे, माटे आवता जवमां मने अमुक वस्तु मलजो एवु जे नियाणु वाधवु, ते चोथु अग्रशौच आर्त्तध्यान कहीये

वीजा रौद्र ध्यानना चार जेद ठे.—

द्वेषे करी प्राणीने मारवानी अथवा वधनादिक करवानी जे चितवना करवी, ते पहेलु हिंसानुवधी रौद्र ध्यान. पैशून्यादिक असत्य असद्भूत वचनबोलवाना तथा ठलादिक करवाना जे अध्यवसाय, ते वीजुं मृषानुवधी रौद्रध्यान क्रोध तथा लोभ्यादिकने वश यश्ने वीजानु ड्रव्य हरण करवानी जे चितवना करवी, ते त्रीजु स्तेयानुवधी रौद्रध्यान ते शब्दादिक विषयनु सौंधनभूत जे धन, तेना रक्षण करवाने अर्थे सर्व संबधीयोने विषे जे दुष्ट चितवन करवु ते, जेमके जो आ सर्व जीवता हशे, तो मारुं धन लश लेशे माटे जो ते मरी जाय, तो सारुं थाय एवी जे दुष्ट चितवना करवी, ते चोथुं सरक्षणानुवधी रौद्रध्यान कहीये ए आर्त्त अने रौद्र वेहु ध्यान संसार संबध फलनां देनारळे

त्रीजा धर्मध्यानना चार जेद ठे -

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तथा वैराग्य जावनाये-
करी वीतरागना वचन उपर जे सहृहणा, एटले श्र-
द्धान राखवु, आपणी मति तुठ ठे पण केवली जा-
पित सर्व सत्यज ठे, एवी जे चिंतवना करवी, ते
पहेलु आज्ञाविचय धर्मध्यान राग द्वेषादिक जे आ-
श्रव ठे, ते इहलोक परलोकने विषे अपाय जूत एटले
अनर्थरूप ठे, एवी जे चिंतवना करवी, ते वीजु अ-
प्यायविचय धर्मध्यान सुख डु खादिकनो विपाक
आवो प्राप्त थयार्थी तेनो हर्ष शोक न करता तेने
मात्र पूर्वकृत कर्मनु फल जाणवु, ते त्रीजु विपाक
विचय धर्मध्यान चोथु सस्थान विचय धर्मध्यान ते
जिनोक्त पद्मद्रव्यना लक्षण सस्थानादिकनी जे
चितवना करवी ते

चोथा शुक्रध्यानना चार जेद ठे - प्रत्येक द्र-
व्यने विषे उत्पादि पर्यायना जेदपणानु चितवन
करवुं, शब्दथी शब्दातरे तथा अर्थथी अर्थातरे अने
द्रव्यथी द्रव्यातरे सक्रमण करवु, तथा एक योगथी
बीजा योगने विषे एटले मनोयोगथी वचनयोगने

विषे, वचनयोगथी काययोगने विषे संक्रमण करबुं, इत्यादिक ते पहेबुं पृथक्त्व वितर्क सविचार शुरु-
ध्यान ए ध्यान ज्ञागिक श्रुत पाठीने त्रणे योग ठ-
तां थाय ठे ए प्रथम ज्ञेद.

२ उत्पादादिक एक पर्याये करी निर्वात स्थान-
कना दीपकनी पेठे निष्प्रकप चित्तवान् यश्ने पूर्व-
लाथी विपरीत रहेबुं, ते चीजुं एकत्व पृथक्त्वम्
विचार शुरु ध्यान ए ध्यान गमे ते एक योग थकां
थाय ठे. आ वे ध्यान, यद्यपि पूर्वगत श्रुतावलंबीने
होय ठे, तथापि मरुदेव्यादिकने श्रुत विना पण
थयां हता, ए विशेषता ठे.

३ तेरमा गुणठाणाने अते मनोयोग, तथा व-
चनयोग रुध्या पठी काययोग रुधता होय, ते त्रीजुं
सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति नामे शुरुध्यान, आ ध्यान,
एकला मात्र काययोगेज थाय ठे

४ शैलेशी गुणठाणे गये थके क्रिया विभेद थइने
जे पाबु पक्खु नहीं, ते चोथु व्युत्थित क्रिया अप्रति-
पाति शुरुध्यान कहिये, ए ध्यान योगना अज्ञावे
थाय ठे पूर्व प्रयोगवने ध्यानपणु थाय ठे, जेम दंरु-

वके चक्र फेरवीने ते दनु काढी लीधा पठी पण पूर्वना प्रयोगथी चक्र फरतुज रहे ठे, तेम जाणवु ए चार ध्यान कक्षा, पण अन्यतर तपमा मात्र धर्म ध्यान अने शुरुध्यान, ए वे उपयोगी ठे, केमके ए वे मोक्षना कारण नूत ठे ए पाचमो ध्यान तप थयो

ठवु (उस्तगोवित्र्य) एटले कायोत्सर्ग तप पण ड्रव्यथी तथा ज्ञावथी वे जेदे ठे तेमा द्रव्योत्सर्गना चार जेद ठे, अने ज्ञावोत्सर्गना त्रण जेद ठे तिहा प्रथम द्रव्योत्सर्ग कहे ठे

१ गहनो त्याग करी जिन कढपादिक जे आदर-वो, ते पहेलो गणोत्सर्ग, २ अणसणादिक व्रत लक्ष्ने शरीरनो जे त्याग करवो, ते बीजो देहोत्सर्ग ३ क-द्वपविशेषे उपधिनो जे त्याग करवो, ते त्रीजो उप-ध्युत्सर्ग, ४ अधिक अशनादिक लेवानो त्याग करवो तथा अशुद्धमान ज्ञातपाणी एटले अशनादिक चारने लेवानो जे त्याग करवो, ते चोथो अशुद्ध ज्ञत पाण उत्सर्ग ए चार प्रकारे ड्रव्यथी उत्सर्ग जाणवो उ-त्सर्ग एटले त्याग करवो, ए अर्थ समजवो

हवे ज्ञावोत्सर्गना त्रण जेद कहे ठे

१ क्रोधादिक चारनो जे त्याग करवो, ते पहेलो कषायोत्सर्ग. २ नरकादिकना ज्वनुं आउखुं वांधवा-
ना कारण, जे मिथ्यात्वादिक ठे, तेनो जे त्याग, ते वीजो ज्वोत्सर्ग अर्थात् ससारोत्सर्ग ३ वधना हेतु जे ज्ञानावरणीयादिक कर्म ज्ञान प्रत्यनिकपणादिक ठे तेनो जे त्याग, ते त्रीजो कर्म उत्सर्ग कहिये ए जावथी उत्सर्ग त्रण जेदे कह्यो, एथी कर्मनी निर्जरा थाय ठे ए रीते ठ प्रकारे (अग्नितरजंतवो) एटले अच्यतर तप (होई) एटले ठे ए ठ जेदने सम्यग् दृष्टि जीव, तप करी माने एम ए वार प्रकारना तपे करी निर्जरा तच्च कह्यु. ॥ ३६ ॥

इति श्री निर्जरा तत्त्व

गाथा ३७ मीना वूटा शब्दना अर्थ.

पयइ=मकृति.

सहावो=स्वजाव

उत्तो=रुहो ठे

त्रिइ=स्थिति

कालावहारण=कालनु अर

धारण.

अणुजागो=अनुजाग

रसो=रस

नेओ=जाणवो

पएसो=पदेश

दल=दल.

सचओ=पचय.

पयइ सहावो वुत्तो, ठिई काळावहारण
 अणुजागो रसो नेठ, पएसो दल सचठ।३७।
 पूर्वे कही गएला वध तत्त्वना ठ जेदनुं
 वर्णन चाले ठे

शब्दार्थ.—प्रकृति वध ते स्वज्ञाव, स्थितिज्ञाव ते कालनो निश्चय,
 अनुजाग वर ते रसजाणवो अने प्रदेश वध ते दल समूह जाणवो
 विस्तारार्थ.—अहीया पूर्वोक्त चार प्रकारनो जे वध ते
 मोदकने दृष्टाते जाणवो जो सूठ प्रमुख वस्तु नां-
 खीने मोदक कयों होय तो ते वायुरोगने मटामे ठे,
 जीरु प्रमुख नाखी मोदक कयों होय, ते पित्तरोगनु
 हरण करे ठे, आ प्रमाणे जे जे द्रव्यना सयोगथी
 मोदक बन्यो होय ते मोदक, अव्य गुणानुसारे वात,
 पित्त, तथा कफादिक रोगोनु हरण करे ठे, ते तेनो
 स्वज्ञाव जाणवो तेम ज्ञानावरणीय कर्मनो ज्ञान
 अपहारक स्वज्ञाव ठे दर्शनावरणीय कर्मनो स्वज्ञा-
 व सामान्य योगरूप जे दर्शन, तेने नाश करवानो
 ठे वेदनीय कर्मनो स्वज्ञाव अनत अव्यावाध सुखने
 टालवानो ठे मोहनीय कर्मनो स्वज्ञाव सम्यक्त्व तथा
 चारित्रने टालवानो ठे आयु कर्मनो स्वज्ञाव अक्षय स्थि-

तिने टालवानो ठे नाम कर्मनो स्वप्नाव शुद्ध अव-
गाहनाने टालवानो ठे गोत्र कर्मनो स्वप्नाव आत्मा-
ना अग्रह लघु गुणने टालवानो ठे अने अनतदान,
अनत लाज, अनंत जोग, अनंत उपजोग, अनत
वीर्य, तेने टालवानो अंतराय कर्मनो स्वप्नाव ठे.

तेम इहां प्रथम (पयइ) एटले प्रकृति वध ते क-
र्मना (सहावो के०) स्वप्नावने (वुत्तो) एटले कह्यो ठे.

२ स्थिति एटले मोदक प्रमुख वस्तुनुं पद्म, मास,
वे मास, त्रण मास, तथा चार मास रहेवानु काल-
मान होय ते. तेम कोइ कर्म पण जघन्यथी अंतर्मु-
हूर्त्त स्थिति रहे, अने उत्कृष्टताये सित्तेर कोमा को-
नी सागरोपम प्रमाणे स्थिति रहे, ते स्थितिनी वचमां
जे कर्म जेटली रहेवानी स्थितिए वांध्यु होय ते कर्म
तेटलो वखत रहे, तेने (कालावहारण)कालनुं अव-
धारण एटले कालनो निश्चय करवारूप (ठिइ) एटले
स्थितिबध कहीये.

३ जेम कोइ मोदक मीठो, ककरो, तीखो होय
ठे, वली कोइ मोदकनो एक ठाणीयो, वे ठाणीयो रस
होय ठे, इत्यादि अनेक प्रकारे अल्प विशेषत्व होयठे,